Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 24

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

6 ज़विल कअदह 1442 हिज्री कमरी 17 इहसान 1400 हिज्री शम्सी 17 जून 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

दफ़नाए जाने के बाद क़ब्र पर नमाज़ जनाज़ा

(1337) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक काला पुरुष या एक काली महिला (जिसका क़ियाम मस्जिद में था)मस्जिद में झाड़ू देना उसका काम था फ़ौत हो गया और उनके फ़ौत हो जाने की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं दी गई। एक दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको याद किया और फ़रमाया : उस का क्या हुआ? लोगो ने उसके फ़ौत होने की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुमने मुझे उसकी ख़बर क्यों नहीं दी? उन्होंने सारी घटना वर्णन की। (हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे) लोगों ने उसकी हालत तुच्छ समझी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मुझे उसकी क़ब्र का पता बता दो। (हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे) फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस की क़ब्र पर आए और उसकी नमाज़-ए- जनाज़ा पढ़ाई।

*हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली-ऊल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : मसला मा'नून: भी उन मसायल में से है जिन में मतभेद है। अक्सरियत ने आज़ाद औचित्यपूर्ण फ़तवा दिया है नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अमल से साबित है परन्तु इमाम मालिक रहमाहुल्लाह और नख्फी रहमाहुल्लाह के नज़दीक यह जायज़ नहीं इस सूरत के अतिरिक्त में कि कोई बग़ैर जनाज़े के दफ़नाया गया हो। इमाम अब्बू हनीफ़ रहमाहुल्लाह और इमाम शाफ़ी रहमाहुल्लाह ने केवल वारिस और उन लोगों के लिए जो उस के क़रीबी रिश्तेदार हैं जायज़ क़रार दिया है क्योंकि जनाज़ा में शरीक होना उन पर बतौर हक़ अनिवार्य है।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल् जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

जब कि इन्सान एक नष्ट होने वाली हस्ती है और मृत्यु का कुछ भी पता नहीं कि कब आ जाए और उम्र एक अस्थायी वस्तु है फिर कितना आवश्यक है कि अपने सुधार और मुक्ति की चिन्ता में लग जाए,

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और शेख़ैन रज़ी अल्लाह अन्हुमा (हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला, हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो) का स्थान

एक बार एक दोस्त ने जो मुहब्बत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम में लीन हैं। आपकी सेवा में निवेदन किया कि क्यों न हम आप को स्तर में शेख़ैन से उत्तम समझा करें और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब क़रीब मानें? अल्लाह अल्लाह! इस बात को सुन कर हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम का रंग उड़ गया और आपके सिर से लेकर पैर तक अजीब व्याकुलता तथा परेशानी छा गई। मैं ग़ैरत वाले, पवित्र ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि इस क्षण ने मेरा ईमान हुज़ूर क़ुदस के बारे में और भी अधिक कर दिया। आपने बराबर छ: घंटे कामिल तक़रीर फ़रमाई। बोलते वक़्त मैंने घड़ी देखी थी और जब आपने तक़रीर ख़त्म की। जब भी देखी। पूरे छ: हुए। एक मिनट का अन्तर भी न था।

इतने समय तक एक विषय को वर्णन करना और निरन्तर वर्णन करना एक चमत्कार था। इस सारे विषय में आपने रसूल करीम अलैहि अफ़ज़लुस्सलातो वत्तसलीमात की प्रशंसा और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अपनी तुलना जूतियां उठाने के वाले से करने के बारे और जनाब शैख़ीन अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलतें वर्णन फ़रमाए और फ़रमाया

"मेरे लिए यह काफ़ी गर्व है कि मैं उन लोगों का प्रशंसक और पैरों की धूल हूँ। जो फ़ज़ीलत ख़ुदा तआला ने उन्हें प्रदान की है वह क़यामत तक कोई और व्यक्ति पा नहीं सकता। कब दुबारा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में पैदा हूँ और फिर किसी को ऐसी सेवा का अवसर मिले जो जनाब शेख़ैन अलैहैमस्स-लाम को मिला।"

17 अगस्त 1899 ई

कुछ दिन हुए बरेली से एक व्यक्ति ने हज़रत की सेवा में लिखा। क्या आप वही मसीह मौऊद हैं जिसके बारे में रसूले ख़ूदा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)ने हदीसों में ख़बर दी है? ख़ुदा तआला की क़सम खाकर आप उसका उत्तर लिखें। मैंने आदत के अनुसार रिसाला "तिरयाक़ुल क़ुलूब" से दो एक ऐसे वाक्य जो इस का काफ़ी उत्तर हो सकते थे लिख दिए। वह व्यक्ति इस पर सन्तुष्ट न हुआ और फिर मुझे सम्बोधित करके लिखा कि मैं चाहता हूँ कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ख़ुद अपने क़लम से क़सम खा कर लिखें कि आया वह वही मसीह

शेष पृष्ठ 9 पर

जो लोग दुनिया की जुस्तजू में रहते हैं उनको जिस क़दर तरक़्क़ी मिलती है उन की जलन बढ़ती जाती है परन्तु जो ख़ुदा तआला की तरफ़ जाता है और जिस क़दर उसकी तरफ़ ध्यान देता है उतना ही उस के दिल का सकून बढ़ता जाता है

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर: राद आयत 29

लोग माल कमाते हैं, हुकूमतें करते हैं उनको अच्छी औलाद मिलती है, अच्छी पत्नियाँ होती हैं, अच्छे मित्र मिलते हैं, व्यापर में फ़ायदा उठाते हैं, खेती बाड़ी में लाभ हासिल करते हैं, ज्ञान में कमाल हासिल करते हैं, उद्देश्यकि हर चीज़ में तरक़्क़ी करते हैं परन्तु फिर भी दिल संतुष्ट नहीं होता। एक इच्छा पूरी होती है तो दो और तकलीफ़ देने वाली इच्छाएं दिल में पैदा हो जाती हैं और हर वक़त दिल में यह एहसास रहता है कि मानों कि असल चीज़ जिसकी उन्हें इच्छा थी उन्हें अभी नहीं मिली। जिस तरह कि एक बच्चा जिस की माँ जुदा हो गई हो कभी किसी की छाती से लगती है कभी किसी की छाती से परन्तु सकून किसी जगह नहीं पाता क्योंकि उसे वह उद्देश्य जिसकी उसे तलाश थी हासिल नहीं हुआ अर्थात उसकी हक़ीक़ी माँ उस को नहीं मिलती। इसी तरह दुनयावी तरक़्क़ी करने वाले लोगों का हाल होता है। हदीस में आता है कि एक जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक औरत को देखा उसका बच्चा गुम हो गया था। वह जिस बच्चे को देखती थी उसे अपनी छाती से लगा लेती प्यार करती और फिर उसे छोड़ कर आगे चली जाती। आख़िर उसको अपना बच्चा मिल गया और उसे लेकर सकून से बैठ

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-16)

लजना के जलसा गाह की कार्यवाही, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में विशेष सफ़लता प्राप्त करने वाली विद्यार्थीयों को प्रमाणपत्र प्रदान फरमाए।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

6 जून 2015 शनिवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे जलसा गाह में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही।

आज लजना के जलसा गाह में प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का महिलाओं के जलसे से भाषण था।

लजना के जलसा गाह की कार्यवाही

आज लजना के जलसा गाह में सुबह के इज्लास का आरंभ दस बजे हज़रत बेग़म साहिबा (अल्लाह तआला आप की सेहत व आयु में बरकत प्रदान करे) की ज़ेर-ए-सदारत हुआ जो मध्याह्न साढ़े ग्यारह बजे तक जारी रहा। इस सैशन में तिलावत क़ुरआन-ए-करीम और उर्दू, जर्मन भाषाओं में दो नज़मों के अतिरिक्त तीन भाषण हुए।

प्रोग्राम के अनुसार मध्याह्न 12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लजना के जलसा गाह में पधारे। नाज़िमा आला और नेशनल सदर लजना जर्मनी ने अपनी नायब नाज़मात के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा और महिलाओं ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद करते हुए अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया।

लजना के इस इज्लास का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ, जो मान्या दुर्रे अजम लोन साहिबा ने की और मान्या हुमा नूरुलहुदा शाह साहिबा ने उन आयात का उर्दू अनुवाद पढ़ा।

इस के बाद मान्या आयशा महमूद साहिबा ने सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की कविता

बाद-ए-इर्फ़ान पिला दे, हाँ पिला आज तू
चेहरा-ए-ज़ेबा दिखा दे , हाँ दिखा आज तू

सूरीली आवाज़ से प्रस्तुत किया

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में विशेष सफ़लता प्राप्त करने वाली विद्यार्थीयों को प्रमाणपत्र प्रदान फ़रमाएं और हज़रत बेग़म साहिबा (अल्लाह तआला आप की सेहत व आयु में बरकत प्रदान करे) ने इन ख़ुशनसीब विद्यार्थीयों को मैडलज़ पहनाए। तालीमी ऐवार्ड प्राप्त करने वाली इन ख़ुशनसीब विद्यार्थीयों के नाम निमंलिखित हैं।

अदीला जावेद साहिबा (सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन डेंटिस्ट्री), मदीहा इवान साहिबा (सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग, सौ प्रतिशत), इमराना नुज़हत चौधरी साहिबा (सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग, 91प्रतिशत), मदीहा राना साहिबा (सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग, 91प्रतिशत), दुर्रे अजम लोन साहिबा (फ़रस्ट स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग, 90प्रतिशत), आसीया परवेज़ साहिबा (डाक्टर आफ़ मैडीसन, 100प्रतिशत), हिना अज़ीज़ साहिबा (मास्टर आफ़ इकनॉमिक्स (पाकिस्तान94 प्रतिशत,गोल्ड मैडलिस्ट), सन्दस फ़ातिमा मिर्ज़ा साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन कैमीकल इंजनीयरिंग GPA 3.7 out of 4) इमराना सबाहत अहमद साहिबा(मास्टर आफ़ विज्ञान इन तकनीकी ब्यालोजी 91प्रतिशत), आलीया हिना मुल्क साहिबा Magister Artium in Ethnology 91 प्रतिशत), ज़नूबिया इफ़्फ़त साहिबा (मास्टर इन ट्रांसलेशन (स्पेन 91 प्रतिशत), सना भट्टी अहमद साहिबा (मास्टर आफ़ आर्टस इन इंटरनैशनल बिज़नस ऐडमिनिस्ट्रेशन ऐंड ट्रेड, 90प्रतिशत), अतीया ज़फ़र साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन मेनेजमेंट ऐंड मार्किटिंग 88 प्रतिशत), अम्तुल रफ़ीक उठवाल साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन फाइनेंस ऐंड एकाऊंटिंग,87 प्रतिशत), Gati कलीम साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन मेनेजमेंट ऐंड फाइनेंस, 87प्रतिशत),आइनतुल बुश्रा मुल्क साहिबा (मास्टर ऑफ विज्ञान इन प्रासैस ऐंड कैमीकल इंजीनियरिंग, 85 प्रतिशत), तसमीया खोखर साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन इंजीनियरिंग बायो मैडीकल 85 प्रतिशत), फ़ायज़ा फ़िरोज़ साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन सोशियोलॉजी (पाकिस्तान GPA 3.6 out of 4) शाइस्ता अंदलीप साहिबा (मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन फ़रंकस (पाकिस्तान GPA 3.32 out of 4) नबीला रऊफ़ नाज़ साहिबा (मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन analytical केमिस्ट्री (पाकिस्तान GPA 3.30 out of 4) मुसर्रत सबा साहिबा (मास्टर आफ़ कॉमर्स (पाकिस्तान GPA 3.70 out of 4) शाज़ीया नसीर साहिबा (मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन फ़िज़ीकल कमसिटरी (पाकिस्तान GPA 3.37 out of 4) बुशरा नयाज़ साहिबा (मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन एजूकेशन (पाकिस्तान GPA 3.34 out of 4) फ़र्हत बानो राना साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन फिज़िक्स (पाकिस्तान 888 points out of 1200)

शाज़ीया शफ़ीक़ साहिबा (मास्टर आफ़ विज्ञान इन फिज़िक्स (पाकिस्तान 78 प्रतिशत), सबीहा नाज़ क़ुरैशी साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन वर्ल्ड स्टडी, 95प्रतिशत), सायमा इलयास साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन बिज़नस ऐडमिनिस्ट्रेशन93प्रतिशत),सोबिया मुहियुद्दीन साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन विज्ञान, 91प्रतिशत), Miss Svea Grafe (स्नातक आफ़ आर्टस इन इंग्लिश, 90 प्रतिशत), मारिया शुऐब साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन सामाजिक विज्ञान, 89प्रतिशत), मदीहा इलयास साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस मनोविज्ञान, 89प्रतिशत), अनीला अहमद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन लैंग्वेज ऐंड कल्चरल विज्ञान, 89प्रतिशत), मलीहा महमूद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन ऑनलाइन जर्नलिज़म, 89प्रतिशत), इनाम क़मर साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन लैंग्वेज ऐंड विज्ञान, 89 प्रतिशत), मलीहा महमूद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन ऑनलाइन जर्नलिज़म 89 प्रतिशत), इनाम क़मर साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन लैंग्वेज, लिटरेचर कल्चर, 89 प्रतिशत), इनाम अहमद साहिबा (स्नातक आफ़ विज्ञान इन यूरोपीयन पब्लिक हैल्थ 89 प्रतिशत), मायदा अहमद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन एजूकेशनल विज्ञान, 88 प्रतिशत), कुर्रतुल-एन अनवर साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन ऐडमिनिस्ट्रेशन, 88 प्रतिशत), नौरीन मेहवर अहमद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन मैडीकल कम्पयूटर विज्ञान, 87 प्रतिशत), मदीहा अहमद साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन इंटरनैशनल हियूमन रिसोर्सज़ ऐंड आर्गेनाईज़ेशन, 87 प्रतिशत), रिज़वाना अन्जुम रऊफ़ साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन रिलीजन, 87 प्रतिशत), निदा नासिर अहमद Mutter साहिबा (स्नातक आफ़ आर्टस इन एजूकेशनल विज्ञान, 86 प्रतिशत), अनीला अहमद साहिबा(स्नातक इन मैकेनिकल इंजीनीयरिंग 85 प्रतिशत), सिदरा यूनुस साहिबा (स्नातक आफ़ विज्ञान इन एरोनेटकल इंजीनीयरिंग (दुबई GPA 2.96 out of 4) मलीहा इरम साहिबा (बी ऐस ऑनर्ज़ इन माईक्रो बायोलोजी ऐंड मोलीक्यूलर जेनेटिकस (पाकिस्तान) पंजाब यूनीवर्सिटी), नवीदुल फ़लाह हसन साहिबा (बी ऐस फ़ूड विज्ञान ऐंड टैक्नोलोजी (पाकिस्तान GPA 3.94 out of 4) फरवा यूसुफ़ साहिबा (आबीटूर,100 प्रतिशत), सुन्दुस हिना अहमद साहिबा (आबीटूर, 99 प्रतिशत), नादिया महमूद चीमा साहिबा (आबीटूर, 99 प्रतिशत), रिदा अहमद साहिबा(आबीटूर, 97 प्रतिशत), गुलशन शहज़ादी साजिद साहिबा(आबीटूर, 94 प्रतिशत), अम्मारा अहमद साहिबा (आबीटूर, 93 प्रतिशत), समरीन जावेद डार साहिबा (आबीटूर, 99 प्रतिशत), बासमा राना साहिबा (ऐडवान्स कॉलेज ऐंटरैंस कवालीफ़ीकेशन 93 प्रतिशत), अनअम ख़ान साहिबा

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दुआ करते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने पर तीन दफ़ा हाथ मारा, اَللّٰهُمَّ اَخْرِجْ مَا فِيْ صَدْرِهٖ مِنْ غِلٍّ وَ أَبْدِلْهُ اِيْمَانًا हे अल्लाह इस के सीने में जो कुछ भी नफ़रत है उसको दूर कर दे और उसको ईमान से बदल दे, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तीन बार फ़रमाई।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारूक़-ए-आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के औसाफ़-ए-हमीदा का वर्णन

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम ने उस वक़्त तक खुल कर अल्लाह की इबादत नहीं की जब तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान न ले आए

आज रमज़ान का अंतिम जुमा है, इस को केवल रमज़ान के आख़िरी जुमा के तौर पर न लें बल्कि यह जुमा हमारे लिए भविष्य के लिए नई राहें निर्धारित करने वाला होना चाहिए

रमज़ान में जिन बातों की तरफ़ तवज्जा हुई है और जो नेकियां करने की तौफ़ीक़ मिली है उन्हें रमज़ान के बाद भी हमें जारी रखने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि इस में तरक़्क़ी करनी चाहिए अन्यथा रमज़ान में से गुज़रना हमारे लिए लाभदायक नहीं है

यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है जो हम पर निर्धारित होती है कि अपने ईमानों को मज़बूत करते हुए अपने आमाल पर मुस्तक़िल नज़र रखते हुए अपनी नसलों को बचाने का माध्यम बनें

हमारा काम है दुआएं करना और दुआएं करना और दुआएं करते चले जाना, रमज़ान में भी और रमज़ान के बाद भी, सबको अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

ये दुआएं बहुत ज़्यादा पढ़ें اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ और رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَ انْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

अहमदियों को अल्लाह तआला से मज़बूत सम्बन्ध क़ायम करते हुए ईमान और यक़ीन के उच्च मयार हासिल करने, नमाज़ों और इबादतों को मयारी बनाने और फिर अपनी औलादों को अल्लाह तआला पर पक्के ईमान की नेअमत से सरफ़राज़ करने की नसीहत

कोरोना के रोग से बचने के लिए, पाकिस्तान के साथ जिन देशों में जमाअत अहमदिया का विरोध हैं वहां के अहमदियों के लिए, हर किस्म के फ़ित्ने से बचने के लिए, उमूमी तौर पर मुसलमानों के लिए, मजमूई तौर पर इन्सानियत के लिए दुआएं करने की तहरीक पाकिस्तान के अहमदियों को विशेषतः सदक़ा और ख़ैरात और दुआओं पर तवज्जा देने का आदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 7 मई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हो रहा था और उनके इस्लाम लाने के बारे में वर्णन हुआ था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के विषय में जिस तरह वर्णन फ़रमाते हैं वह यह है कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम का बराबर सख़्ती से विरोध करते रहे।'' अर्थात जब तक इस्लाम नहीं लाए निरंतर विरोध कर रहे थे। "एक दिन उनके दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि क्यों न उस मज़हब के संस्थापक का ही काम समाप्त कर दिया जाए और इस ख़्याल के आते ही उन्होंने तलवार हाथ में ली रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल के लिए घर से निकल खड़े हुए। रास्ता में किसी ने पूछा कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहाँ जा रहे हो? उन्होंने उत्तर दिया मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मारने के लिए जा रहा हूँ। उस व्यक्ति ने हंस कर कहा अपने घर की तो पहले ख़बर लो। तुम्हारी बहन और बहनोई तो उस पर ईमान ले आए हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ये झूठ है। उस व्यक्ति ने कहा तुम स्वयं जा कर देख लो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां गए। दरवाज़ा बंद था और अंदर एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा रहे थे। आप ने दस्तक दी। अंदर से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बहनोई की आवाज़ आई। कौन है? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया उमर। उन्होंने जब देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए हैं और वह जानते थे कि आप इस्लाम के शदीद मुख़ालिफ़ हैं तो उन्होंने सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु को जो क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा रहे थे कहीं छिपा दिया।

इसी तरह क़ुरआन-ए-करीम के पृष्ठ भी किसी कोना में छिपा कर रख दिए और फिर दरवाज़ा खोला। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चूँकि यह सुनकर आए थे कि वे मुस्लमान हो गए हैं। "अर्थात उनके बहनोई और बहन।'' इस लिए उन्होंने आते ही पूछा कि दरवाज़ा खोलने में देर क्यों की है? आपके बहनोई ने उत्तर दिया आख़िर देर लग ही जाती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : यह बात नहीं। कोई विशेष बात दरवाज़ा खोलने में रोक बनी है। मुझे आवाज़ आ रही थी कि तुम उईस साबी की बातें सुन रहे थे। (मक्का के मुशरेकीन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को साबी कहा करते थे) उन्होंने पर्दा डालने की कोशिश की "उनके बहनोई ने" लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्सा आया और वह अपने बहनोई को मारने के लिए आगे बढ़े। आपकी बहन अपने पति के प्रेम के कारण बीच में आ गईं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चूँकि हाथ उठा चुके थे और उनकी बहन अचानक बीच में आ गईं वह अपना हाथ रोक नहीं सके और उनका हाथ ज़ोर से उनकी नाक पर लगा "अर्थात बहन की नाक पर" और उस से ख़ून बहने लगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जज़बाती आदमी थे यह देखकर कि उन्होंने औरत पर हाथ उठाया है जो अरब के रिवाज के ख़िलाफ़ था और फिर बहन पर हाथ उठाया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बात टलाने के लिए कहा अच्छा मुझे बताओ तुम क्या पढ़ रहे थे? बहन ने समझ लिया कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अंदर नरमी के जज़बात पैदा हो गए हैं। उसने कहा जाओ तुम्हारे जैसे इन्सान के हाथ में मैं वह पाक चीज़ देने के लिए तैयार नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा फिर मैं क्या करूँ? बहन ने कहा वह सामने पानी है नहा कर आओ तब वह चीज़ तुम्हारे हाथ में दी जा सकती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नहाए और वापिस आए। बहन ने क़ुरआन-ए-करीम के पृष्ठ जो वे सुन रहे थे आपके हाथ में दीए चूँकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अंदर एक बदलाव पैदा हो चुका था इस लिए क़ुरआन की आयात पढ़ते ही उनके अंदर भावुकता पैदा हुई और जब वह आयात

ख़त्म कर चुके तो बे-इख़्तियार उन्होंने कहा कि اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ये शब्दों सुन कर वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु भी बाहर निकल आए जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से डर कर छिप गए थे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़त किया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आजकल कहाँ रहते हैं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन दिनों मुख़ालिफ़त की वजह से घर बदलते रहते थे। उन्होंने बताया कि आजकल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दार-ए-अर्क़म में तशरीफ़ रखते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन उसी हालत में जब कि नंगी तलवार उन्होंने लटकाई हुई थी उस घर की तरफ़ चल पड़े। बहन के दिल में संदेह पैदा हुआ कि शायद वह बुरी नीयत से न जा रहे हों। उन्होंने आगे बढ़कर कहा ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें उस वक़्त तक नहीं जाने दूँगी जब तक तुम मुझे इतमीनान न दिला दो कि तुम कोई शरारत नहीं करोगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं पक्का वादा करता हूँ कि मैं कोई फ़साद नहीं करूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां पहुंचे। "अर्थात उस जगह जहां रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे" और दस्तक दी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा अंदर बैठे हुए थे दीनी दरस हो रहाथा। किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कौन? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया उमर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दरवाज़ा नहीं खोलना चाहिए। ऐसा न हो कि कोई फ़साद करे। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु नए-नए ईमान लाए हुए थे वह सैनिक शैली के आदमी थे। उन्होंने कहा दरवाज़ा खोल दो। मैं देखूँगा वह क्या करता है। इस लिए एक व्यक्ति ने दरवाज़ा खोल दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उमर! तुम कब तक मेरी मुख़ालिफ़त में बढ़ते चले जाओगे? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं मुख़ालिफ़त के लिए नहीं आया मैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम बनने के लिए आया हूँ। वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो एक घंटा पहले इस्लाम के शदीद दुश्मन थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मारने के लिए घर से निकले थे एक आन में आला दर्जा के मोमिन बन गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का के रईसों में से नहीं थे लेकिन बहादुरी की वजह से नौजवानों पर आपका अच्छा असर था। जब आप मुस्लमान हुए तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने जोश में आकर नारा-ए-तकबीर बुलंद किए। इस के बाद नमाज़ का वक़्त आया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़नी चाही तो वही उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो दो घंटे क़बल घर से इस लिए निकला था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मारे। उसने दुबारा तलवार निकाल ली और कहा। हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ख़ुदा तआला का रसूल और उस के मानने वाले तो छुप कर नमाज़ें पढ़ें और मक्का के मुशरेकीन बाहर दनदनाते फिरें यह किस तरह हो सकता है? मैं देखूँगा कि हमें ख़ाना काअबा में नमाज़ अदा करने से कौन रोकता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ये जज़बा तो बहुत अच्छे हैं लेकिन अभी हालात ऐसे हैं कि हमारा बाहर निकलना मुनासिब नहीं।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 141 से 143)

लेकिन इस के बाद फिर ख़ाना काअबा में नमाज़ भी अदा की गई जैसा कि पहले भी इस का वर्णन हो चुका है। इस को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी वर्णन फ़रमाया है कि "आरम्भिक समय में इस्लाम में केवल दो व्यक्ति मुस्लमानों में बहादुर समझे जाते थे। एक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु। जब ये दोनों इस्लाम में दाख़िल हुए तो उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि हम यह पसंद नहीं करते कि हम घरों में छिप कर अल्लाह तआला की इबादत किया करें। जब काअबा पर हमारा भी हक़ है तो कोई वजह नहीं कि हम अपने इस हक़ को हासिल न करें और खुले बंदों अल्लाह तआला की इबादत न करें। इस लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो कुफ़्फ़ार को फ़साद के जुर्म से बचाने के लिए घर में नमाज़ अदा कर लिया करते थे ख़ाना काअबा में इबादत के लिए तशरीफ़ ले गए और उस वक़्त आपके एक तरफ़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार खींच कर चले जा रहे थे और दूसरी तरफ़ अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और इस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ाना काअबा में खुले तौर पर नमाज़ अदा की।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 10)

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम की ख़बर क़ुरैश में फैली तो वे सख़्त जोश में आ गए और इसी जोश की हालत में उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान का घेराव कर लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर निकले तो उनके इर्द-गिर्द लोगों का एक बड़ा मजमा इकट्ठा हो गया और क़रीब था कि कुछ जोशीले उन पर हमला-आवर हो जाएं लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी निहायत दिलेरी के साथ उनके सामने डटे रहे। आख़िर उसी हालत में मक्का का रईस आज़म आस बिन वायल वहां आ गया और इस भीड़ को देखकर उसने अपने सरदारों के रूप में आगे बढ़कर पूछा कि यह क्या मुआमला है? लोगों ने कहा : उमर साबी हो गया है। उस रईस ने अवसर को समझ कहा : तो ख़ैर, फिर भी इस हंगामे की ज़रूरत नहीं है। मैं उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पनाह देता हूँ। इस आवाज़ के सामने अरबी दस्तूर के मुताबिक़ लोगों को ख़ामोश होना पड़ा और वह आहिस्ता-आहिस्ता बिखर गए। इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ दिन तक अमन में रहे क्योंकि आस बिन वायल की पनाह की वजह से कोई उनसे झगड़ा नहीं करता था लेकिन इस हालत को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ग़ैरत ने ज़्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं किया। इस लिए अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था कि उन्होंने आस बिन वायल से जा कर कह दिया कि मैं तुम्हारी पनाह से निकलता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि इस के बाद में मक्का की गलियों में बस पिटता और पीटता ही रहता था। अर्थात लड़ाई झगड़ा ही रहता था परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कभी किसी के सामने आँख नीची नहीं की।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु 159)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "देखो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कितने-कितने शदीद दुश्मन थे परन्तु फिर उनमें कैसी तबदीली पैदा हुई। न केवल उनकी इस्लाह हुई बल्कि वे रूहानियत के ऐसे उच्च स्थान पर पहुंच गए कि उनका पहचानना भी मुश्किल हो गया।" अर्थात बिल्कुल काया पलट गई। पहचाने नहीं जाते थे कि ये वही लोग हैं। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो इस्लाम और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ लठ लिए फिरते थे जब उन्हें इस्लाम लाना नसीब हुआ तो उनमें ऐसी तबदीली पैदा हुई कि दुनिया के फ़ायदा के लिए अपनी जान जोखिम में डालने लगे और दिन रात इस्लाम की ख़िदमत में व्यस्त हो गए।" (तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 45)

यहां "जान जोखिम में डालने लगे'' दीन के फ़ायदा के लिए होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार की घटना का वर्णन करते हुए इस तरह फ़रमाते हैं: "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से देखो किस क़दर फ़ायदा पहुंचा। एक ज़माना में यह ईमान नहीं लाए थे और चार वर्ष की देरी हो गई। अल्लाह तआला ख़ूब मस्लिहत समझता है कि इस में क्या रहस्य था। अबूजहल ने तलाश की कि कोई ऐसा व्यक्ति तलाश किया जाए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दे। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े बहादुर और दिलेर मशहूर थे और शौकत रखते थे। उन्होंने आपस में मश्वरा करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल का बीड़ा उठाया और मुआहिदा पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और अबूजहल के दस्तख़त हो गए और क़रार पाया कि यदि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़तल कर आए तो इस क़दर रुपया दिया जाए।'' फ़रमाते हैं देखो "अल्लाह तआला की क़ुदरत है कि वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो एक वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शहीद करने के लिए जाते हैं दूसरे वक़्त वही उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम में हो कर स्वयं शहीद होते हैं। वह क्या अजीब ज़माना था। उद्देश्य उस वक़्त यह मुआहिदा हुआ कि मैं क़तल करता हूँ। इस तहरीर के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश और तजस्सुस में लगे रातों को फिरते थे।'' अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तजस्सुस में लगे रहते थे, रातों को फिरते थे "कि कहीं अकेले मिल जाएँ तो क़तल कर दूं'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को।'' लोगों से दरयाफ़त किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अकेले कहाँ होते हैं। लोगों ने कहा कि आधी रात गुज़रने के बाद ख़ाना काअबा में जा कर नमाज़ पढ़ा करते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर बहुत ही ख़ुश हुए। इस लिए ख़ाना काअबा में आकर छुपे रहे। जब थोड़ी देर गुज़री तो जंगल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की आवाज़ आती हुई मालूम हुई और वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही की आवाज़ थी। इस आवाज़ को सुनकर और यह मालूम कर के कि वह इधर ही को आ रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और भी एहतियात कर के छुपे और यह इरादा कर

लिया कि जब सजदे में जाऐंगे तो तलवार मार कर सिर मुबारक शरीर से अलग कर दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आते ही नमाज़ शुरू कर दी। फिर इस से आगे के वाक़ियात स्वयं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं।'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इस से आगे के वाक़ियात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सजदा में इस क़दर रो-रो कर दुआएं कीं कि मुझ पर कपकपी आने लगी। यहां तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी कहा कि سَجَدَ لَكَ رُوْحِیْ وَجَنَانِیْ۔ अर्थात हे मेरे मौला मेरी रूह और मेरे दिल ने भी तुझे सजदा किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इन दुआओं को सुन सुन कर जिगर टुकड़े टुकड़े होता था। आख़िर मेरे हाथ से सच्चाई के भय के कारण से तलवार गिर पड़ी। मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस हालत से समझ लिया कि यह सच्चा है और ज़रूर सफ़ल हो जाएगा परन्तु तामसिक वृत्ति बुरी होता है। "बार-बार उभारती है।'' जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ कर निकले मैं पीछे-पीछे हो लिया। पांव की आहट जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मालूम हुई। रात थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कौन है? मैं ने कहा उमर। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! न तू रात को पीछा छोड़ता है और न दिन को। उस वक़्त मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह की ख़ुशबू आई और मेरी रूह ने महसूस किया आँहज़रत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बद्दुआ करेंगे। मैं ने अर्ज़ किया : हे हज़रत बद्दुआ न करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि वह वक़्त और वह घड़ी मेरे इस्लाम की थी। यहां तक कि ख़ुदा ने मुझे तौफ़ीक़ दी कि मैं मुस्लमान हो गया।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 180-181)

यह एक रिवायत है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की और एक और जगह दूसरी भी इसी की तफ़सील वर्णन करते हुए एक वक्फे के बाद आप ने वर्णन फ़रमाया है। वे भी यही बातें हैं लेकिन इस में आख़िर में एक दो शब्दों ज़रा और विभिन परिणाम निकाले हुए हैं। फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अबू जहल के साथ इस्लाम से पहले मिलते थे। बल्कि लिखा है कि एक मर्तबा अबू जहल ने योजना बनाई कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का ख़ातमा कर दिया जाए और कुछ रुपया भी बतौर इनाम निर्धारत किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस काम के लिए चुने गए। इस लिए उन्होंने अपनी तलवार को तेज़ किया और अवसर की तलाश में रहे। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता मिला कि आधी रात को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम काबा में आकर नमाज़ पढ़ते हैं। इस लिए यह काअबा में आकर छुपे रहे और उन्होंने सुना कि जंगल की तरफ़ से لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ की आवाज़ आती है और वह आवाज़ क़रीब आती गई। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम काअबा में दाख़िल हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सजदे में इस क़दर मुनाजात की कि मुझे तलवार चलाने का साहस नहीं रहा। इस लिए जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आगे चले। पीछे-पीछे मैं था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मेरे पांव की आहट मालूम हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कौन है? मैं ने कहा कि उमर। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! न तू दिन को मेरा पीछा छोड़ता है न रात को। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन से उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने महसूस किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बद्दुआ करेंगे। इसलिए मैंने कहा कि हज़रत आज के बाद में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कष्ट नहीं दूँगा। अरबों में चूँकि वादे का लिहाज़ बहुत बड़ा होता था। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यक़ीन कर लिया परन्तु दरअसल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वक़्त आ गया था।'' ये बातें पिछले हवाले से ज़रा नई हैं। "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में गुज़रा कि इस को ख़ुदा ज़ाए नहीं करेगा। इस लिए आख़िर हज़रत उमर मुस्लमान हुए और फिर वे दोस्तीयाँ वे सम्बन्ध जो अबू जहल और दूसरे मुख़ालिफ़ों से थे तुरंत टूट गए और उनकी जगह एक नया प्रेम क़ायम हुई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा मिले और फिर इन पहले संबंधों की तरफ़ कभी ख़्याल तक नहीं आया।" (मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 340)

एक जगह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने का वही वाक़िया इसी प्रकार वर्णन करते हुए फिर आप वर्णन ने फ़रमाया है। हल्के से कुछ एक शब्द अलग होंगे। आप फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल के लिए जाना आप लोगों ने सुना होगा। अबू जहल ने एक किस्म का विज्ञापन क़ौम के लोगों में दे रखा था कि जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल करेगा वह बहुत कुछ इनाम-ओ-इकराम का अधिकारी होगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लमा स्वीकार करने से पहले अबू जहल से मुआहिदा किया और क़तल के लिए तैयार हो गया। उस को किसी उचित समय की तलाश थी। पूछने पर उसे मालूम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रात के वक़्त ख़ाना काअबा में नमाज़ पढ़ने के उद्देश्य से आते हैं। यह वक़्त उम्दा समझ कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम को ही ख़ाना काअबा में जा छुपे। आधी रात के वक़्त जंगल में से لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ की आवाज़ आना शुरू हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरादा किया कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सजदे में गिरें तो उस वक़्त क़त्ल करूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दर्द के साथ दुआ शुरू की और सजदे में इस तरह हम्द-ए-इलाही का वर्णन किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल पसीज गया। उसकी सारी जुर्रत जाती रही और उसका क़ातिलाना हाथ सुस्त हो गया।'' यहां इस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की नरमी को आप ने इस तरह वर्णन किया है। "नमाज़ ख़त्म करके जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घर को चले तो उनके पीछे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आहट सुन कर पूछा और मालूम होने पर फ़रमाया कि हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तू मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बद्दुआ के डर से बोल उठे कि हज़रत मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल का इरादा छोड़ दिया। मेरे हक़ में बद्दुआ न कीजिएगा। इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि वह पहली रात थी जब मुझ मैं इस्लाम की मुहब्बत पैदा हुई।'' (मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 61)

यह बताने के लिए अब मैं ने तीन अलग अलग हवाले पढ़े हैं। एक जनवरी 1901 ई. का है, एक अगस्त 1902 ई. का, एक जून 1904 का है या शायद 1907 ई. का है। बहरहाल इन तीनों जगहों पर रात को ख़ाना काअबा में हमले का वर्णन आप ने फ़रमाया है। शायद इस के बाद फिर नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर दिन को भी निकले होंगे और वह बहन भाई वाला वाक़िया पेश आया जिसको आम वर्णन किया जाता है लेकिन बहरहाल आपने तीनों दफ़ा यही फ़रमाया और यह हुआ क्योंकि तामसिक वृत्ति का भी आप ने वर्णन किया। हो सकता है फिर एक जोश आया हो और उस वक़्त निकले हों और दोनों वाक़ियात में यह वर्णन तो बहरहाल है चाहे वह बहन वाला वाक़िया, बहन बहनोई वाला या यह रात को क़तल वाला कि अबू जहल के भड़काने और इनाम निर्धारित करने पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह इरादा किया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अबू जहल को फ़िरऔन कहा गया है परन्तु मेरे नज़दीक वह तो फ़िरऔन से बढ़कर है फ़िरऔन ने तो आख़िर कहा اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ (यूनुस : 91) परन्तु यह आख़िर तक ईमान नहीं लाया मक्का में सारा फ़साद उसी का था और बड़ा घमंडी और ख़ुद-पसंद, अज़मत और शरफ़ को चाहने वाला था उस का असल नाम भी उमर था और ये दोनों उमर मक्का में थे। ख़ुदा की हिक्मत कि एक उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को खींच लिया और एक बेनसीब रहा। उस की रूह तो दोज़ख़ में जलती होगी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़िद छोड़ दी तो बादशाह हो गए।" (मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 247)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दुआ करते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने पर तीन दफ़ा हाथ मारा। اَللّٰهُمَّ اَخْرِجْ مَا فِیْ صَدْرِهٖ مِنْ غِلٍّ وَ اَبْدِلْهُ اِیْمَانًا۔ हे अल्लाह इसके सीने में जो कुछ भी नफ़रत है उस को दूर कर दे और उस को ईमान से बदल दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ये दुआ तीन दफ़ा फ़रमाई।

(अल-इस्तेयाब फ़ी मारफ़ तिलसहाब भाग 3 पृष्ठ 237 बाब उमर बिन अलखत्ताब दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

जैसा कि हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से पहले की ज़िंदगी में देख आए हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाने से पहले मुस्लमानों

के सख़्त ख़िलाफ़ थे लेकिन जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लमा स्वीकार किया तो आपका इस्लाम स्वीकार करना मुस्लमानों के लिए फ़तह और तंगी से निजात साबित हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमने उस वक़्त तक खुल कर अल्लाह की इबादत नहीं की जब तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान नहीं ले आए।

(अल-इस्तेयाब फ़ी तमीईज़ सहाबा भाग 4 पृष्ठ 484 वर्णन उमर बिन ख़त्ताब दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

अब्दुर्रहमान बिन हारिस वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जिस रात में ने इस्लाम इख़तियार किया तो मैं ने सोचा कि अहल-ए-मक्का में से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अदावत में सबसे ज़्यादा कौन बढ़ा हुआ है कि मैं उस के पास जाऊं और इस को बताऊं कि मैं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने सोचा वह अबू जहल ही है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जब सुबह हुई तो मैं उस के पास गया और उस का दरवाज़ा खटखटाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अबू जहल मेरे पास आया कहा : हे मेरे भांजे ख़ुश-आमदीद। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को उसने कहा कि मेरे भांजे ख़ुश-आमदीद। तुम किस लिए आए हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने कहा कि मैं तुम्हें बिताने आया हूँ कि मैं अल्लाह पर और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आया हूँ और मैं ने उस की तसदीक़ की है जो वह लाया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उसने दरवाज़ा मुझ पर बंद कर दिया और कहा कि अल्लाह तुझको और इस चीज़ को जो तू लाया है बर्बाद करे।

(सीरत इब्ने हशाम पृष्ठ 162 वर्णन इस्लाम उमर बिन ख़त्ताब दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई.)

ये अबू जहल के शब्दों थे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब मेरे पिता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो उन्होंने लोगों से पूछा कि क़ुरैश में सबसे ज़्यादा बातें फैलाने की आदत किस व्यक्ति को है? उन्होंने बताया कि जमील बिन मामर हज्मी। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु सबह सुबह उस के पास चले गए और मैं भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे-पीछे गया और मैं देख रहा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु कया करते हैं और मैं कम उमर तो था लेकिन जो कुछ देखता था उस को समझता था। यह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कह रहे हैं। यहां तक कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे तो उस से कहा कि हे जमील! क्या तुझे मालूम है कि मैं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और दीन -ए- मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में दाख़िल हो चुका हूँ। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ! आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात को दुहराया नहीं था अर्थात दूसरी दफ़ा कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि वह अपनी चादर को घसीटते हुए निकल पड़ा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस के पीछे-पीछे हो लिए। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं भी अपने पिता के पीछे हो लिया यहां तक कि जब वह अर्थात वह व्यक्ति जमील ख़ाना काअबा के दरवाज़े पर खड़ा हो गया और बुलंद आवाज़ से फिर चीख़ा कि हे क़ुरैश के गिरोह! उसने काअबा के दरवाज़े पर खड़े हो के यह ऐलान किया कि हे क़ुरैश के गिरोह और वे लोग काअबा के गर्द अपनी अपनी मज्लिसों में बैठे हुए थे। उस की तरफ़ मुतवज्जा हुए। उसने कहा कि सुन लो उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु साबी हो गया है। रावी कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उसके पीछे से ये कह रहे थे कि उसने झूठ कहा है। मैं ने तो इस्लाम स्वीकार किया है। साबी नहीं हुआ बल्कि मैं ने इस्लाम स्वीकार किया है और इस बात की गवाही दी है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस के बंदे और रसूल हैं। फिर क़ुरैश आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर झपटे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु उन से और वे आप रज़ियल्लाहु अन्हु से बराबर लड़ते रहे अर्थात फिर लड़ाई होती रही यहां तक कि सूरज उनके सिरों पर आगया। रावी ने कहा कि आप थक गए अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थक गए तो बैठ गए और लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर खड़े हो गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कह रहे थे तुम जो चाहो करो मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि यदि हम तीन सौ मर्द हो गए तो हम उसे अर्थात मक्का को तुम्हारे लिए छोड़ देंगे या तुम उसे हमारे लिए छोड़ दोगे। अर्थात फिर हम आज़ादी से हर चीज़ करेंगे। रावी ने कहा कि वे लोग इसी हालत में थे कि क़ुरैश में से एक बूढ़ा व्यक्ति आया जो यमनी कपड़े का नया लिबास और नक़्श-ओ-निगार वाली क़मीज़ पहने हुए था यहां तक कि वह उनके पास आकर खड़ा हो गया और कहा कि तुम्हारा क्या मुआमला है? उन्होंने कहा कि उमर साबी हो गया है। उसने कहा कि फिर क्या हुआ। एक व्यक्ति ने अपने लिए एक बात इख़तियार कर ली है। फिर तुम क्या चाहते हो? क्या तुम समझते हो कि बनू अदी बिन काअब अपने आदमी को इस तरह तुम्हारे हवाले कर देंगे। इस व्यक्ति को छोड़ दो। रावी कहते हैं कि अल्लाह क़सम! फिर वे लोग आपसे यकदफ़ा अलग हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने अपने पिता से अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा जबकि उन्होंने मदीना की तरफ़ हिज्रत कर ली थी। बहुत अरसा बाद मदीना हिज्रत करने के बाद उनसे पूछा कि हे मेरे बाप वह व्यक्ति कौन था जिसने मक्का में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के दिन लोगों को झिड़क कर आपसे दूर कर दिया था जबकि वे आपसे लड़ रहे फ़रमाया : हे मेरे प्यारे बेटे वह आस बिन वायल सहमी था। (सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 161-162 वर्णन इस्लाम उमर बिन ख़त्ताब दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई.)

बुख़ारी में एक रिवायत यह भी वर्णन हुई है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक-बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में भयभीत बैठे थे कि इतने में अबू अम्र आस बिन वायल सहमी आया और आया और वह एक नक़्शदार चादर और एक रेशमी हाशियादार क़मीस पहने हुए था और वह बनू सहम क़बीला में से था जो ज़माना-ए-जाहिलीयत में हमारा मित्र था। आस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा तुम्हारा यह क्या हाल है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तुम्हारी क़ौम यह ख़्याल करती है कि मैं मुस्लमान हो गया तो मुझे मार डालेंगे। उन्होंने कहा कि तुम तक कोई नहीं पहुंच सकेगा। जब आस ने यह बात कही तो मैं मुतमइन हो गया। आस चला गया और लोगों से मिला। यह हालत थी कि वादी मक्का उन लोगों से भरी हुई थी। आस ने पूछा कहाँ का क़सद है? उन्होंने कहा कि हम उस ख़त्ताब के बेटे की तरफ़ जा रहे हैं जो बेदीन हो गया है। उन्होंने कहा उस के पास नहीं जाना। यह सुनकर लोग वापिस आ गए। (सही अलबुख़ारी किताब मनाक़िब अनसार बाब इस्लाम उमर बी बिन ख़त्ताब हदीस 3864)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के भयभीत होने वाली यह बात जो रिवायत में आती है वह सही नहीं लगती। यह तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत के ख़िलाफ़ बात है। हो सकता है कि परेशानी के निशान हों जिसे रावी ने ख़ौफ़ समझा हो जैसा कि पहले भी एक रिवायत में आ चुका है कि कुछ अरसा बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह पनाह वापिस भी कर दी थी और इस का वर्णन आगे भी मिलेगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने की रिवायात की तशरीह में आस बिन वायल सहमी का वर्णन करते हुए हज़रत ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि :

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने से पहले कुछ लोग जो ईमान लाए थे उन पर सख़्ती किए जाने का भी वर्णन है और बताया गया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी मुस्लमान होने पर सख़्ती का निशाना बनते यदि आस बिन वायल सहमी उन्हें अपनी पनाह में लेने का ऐलान न करता। आस बिन वायल क़ुरैश के अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति में से था और बनू सहम क़बीला में से था। उस का गोत्र यह है। आस बिन वायल बिन हाशिम बिन सईद बिन सहम। हिज्रत से पूर्व कुफ़्र की हालत में ही फ़ौत हो गया था और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बनू अदी ख़ानदान में से थे और बनू अदी और बनू सहम का ख़ानदान एक दूसरे के मित्र थे और इस मुआहिदा और दोस्ती और मदद की वजह से आस बिन वायल ने अपना अख़लाक़ी कर्तव्य समझा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद करें।

(उद्धरित सहीह बुख़ारी (मुतर्जिम) किताब मनाक़िब अंसार बाब इस्लाम उमर बिन ख़त्ताब भाग 7 पृष्ठ 346-347)

जैसा कि मैं ने पहले बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आस बिन वायल की पनाह को एक वक़्त में रद्द कर दिया था। इस लिए इस बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं ही वर्णन करते हैं कि मैं नहीं चाहता था कि किसी मुस्लमान को मार पड़ते हुए देखता रहूं और मुझे न मारा जाए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने सोचा यह तो कोई बात नहीं। यहां तक कि मुझे भी वही तकलीफ़ पहुंचे जो दूसरे मुस्लमानों को पहुंच रही है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं उस वक़्त तक रुका रहा यहां तक कि वे लोग काअबा में इकट्ठे हुए। मैं अपने मामूं आस बिन वायल के पास गया। मैं ने कहा मेरी बात सुनें उसने कहा मैं क्या बात सुनूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने कहा कि आपकी पनाह आपको

वापिस लौटाता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उसने कहा कि हे मेरे भांजे ऐसा न कर। मैंने कहा बस ऐसा ही है। उसने कहा : जैसे तुम्हारी मर्ज़ी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने पनाह वापिस लौटा दी तो उस के बाद बस में मार खाता और मारता ही रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने इस्लाम को इज़्ज़त अता की। (ओसोदुल ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 141 उमर बिन ख़त्ताब दारुल क़ुतुब इल्मिया 2003 ई.)

मुहम्मद बिन उबैद वर्णन करते हैं कि मुझे याद है हम बैतुल्लाह में नमाज़ अदा नहीं कर सकते थे यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम ले आए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन कुफ़्फ़ार से लड़ाई की यहां तक कि उन्होंने हमें छोड़ दिया और हम नमाज़ अदा करने लगे।

(अल् तब्कातुल अल् कुबरा साद भाग 3 पृष्ठ 143 इस्लाम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु प्रकाशन दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुस्लमान हुए हम इज़्ज़त से ही रहे।

(सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी बाब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस 3684)

जो बाद की सख़्तियां थीं सख़्तियां तो वही जारी रही हैं लेकिन पहली सख़्तियों के मुक़ाबले में ये लोग इन सख़्तियों को सख़्तियां नहीं समझते थे हालाँकि तारीख़ बताती है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी सख़्तियां झेलनी पड़ीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हाशिम रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ थामे हुए थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप मुझे हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हैं सिवाए मेरी जान के। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आप से फ़रमाया : नहीं। उस की क़सम जिसके कब्ज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है तुम्हारा ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं हो सकता जब तक मैं तुम्हारी जान से ज़्यादा तुम्हें महबूब न हो जाऊं। यह बड़ी ज़रूरी चीज़ है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया। अल्लाह की क़सम! अब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मझे मेरे नफ़्स से भी ज़्यादा महबूब हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हाँ अब है उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, अब है उमर रज़ियल्लाहु अन्हु। (सही अल् बुख़ारी किताब كتاب الايمان والنذور باب كيف كانت يمين النبىﷺ हदीस 6632)

अर्थात अब ठीक है। यह है ईमान की हालत।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मदीना की तरफ़ हिज्रत का वर्णन करते हुए वर्णन करते हैं कि मुझे अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि मैं मुहाजिरीन में से किसी को नहीं जानता जिसने छुप कर हिज्रत न की हो सिवाए हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिज्रत का इरादा किया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तलवार लटकाई, कंधे पर अपनी कमान रखी, तीर हाथ में लिए और नेज़ा पकड़े हुए काअबा की तरफ़ गए। सरदाराने-ए-क़ुरैश उस के सेहन में थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वक़ार के साथ काअबा के सात चक्कर लगाए। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु मक़ाम-ए-इबराहीम पर आए और इतमीनान से नमाज़ अदा की। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु हर गिरोह के पास एक-एक कर के खड़े हुए और उनसे कहा : चेहरे बिगड़ जाएं अल्लाह नाकों को ख़ाक-आलूदा कर दे। जो चाहता है कि उस की माँ उसे खोए उस की औलाद यतीम हो और उस की बीवी विधवा हो वह इस वादी के पार मुझे मिल ले। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सिवाए चंद कमज़ोर मुस्लमानों के किसी ने पीछा नहीं किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मालूमात फ़राहम कीं और उनकी रहनुमाई की। फिर अपने रास्ते पर चल पड़े।

(उसोदुल ग़ाबा फ़ी मारफ़तिल सहाबा भाग नंबर 3 पृष्ठ 648 649-उमर बिन ख़त्ताब हिज्रता प्रकाशन दारुल फ़िकर बेरूत 2003 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस तरह खुल के हिज्रत करने के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की केवल यही एक रिवायत है जो वर्णन की जाती है लेकिन कई सीरत निगार इस से मुख़्तलिफ़ राय रखते हैं। मुहम्मद हुसैन हैकल ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत-ओ-सवानेह पर आधारित एक किताब लिखी है। उसने इस बेहस को उठाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिज्रत का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया था कि ख़ामोशी से चुपके से और छुप कर मक्का से निकलें ताकि मुख़ालिफ़ीन को ज्ञात न हो और वे रोक पैदा करें और मज़ीद तंग करें। तो इस वाज़िह हुक्म के होते हुए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कैसे उस की ना-फ़रमानी कर सकते थे जबकि उस के साथ साथ तबक़ात इबन-ए-साद और इब्ने हश्शाम में वज़ाहत से लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी दीगर मुस्लमानों की तरह चुपके से हिज्रत की थी। बहरहाल यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत को किसी तरह सही क़रार देना भी है तो हो सकता है कि किसी वक़्त खड़े हो कर यह ऐलान किया हो और उस वक़्त हिजरत न की हो। काअबा में खड़े हो कर सरदारों के सामने जो ऐलान किया था कि मैं जा रहा हूँ मुझे रोक लेना लेकिन हिज्रत नहीं की हो और जब हिज्रत का प्रोग्राम बना तो ख़ामोशी से हिज्रत की। बहरहाल हैकल की यह बात अपने अंदर वज़न रखती है। और जैसा कि मैं ने बताया कि तबक़ात इबन-ए-साद और इब्ने हश्शाम भी ऐसा ही लिखते हैं। लगता यही है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी दीगर मुस्लमानों की तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ ख़ामोशी से हिज्रत की होगी क्योंकि मक्का में जैसे हालात थे उनके कारण खुल्लम खुल्ला ऐसा करना संभव नहीं था बल्कि हम देखते हैं कि फ़तह मक्का तक जिसने भी हिज्रत की उसने ख़ामोशी से हिज्रत करने में ही आफ़ियत जानी। बहरहाल यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की इस रिवायत को सही भी माना जाए तो हो सकता है कि इन्फ़िरादी कार्य हो लेकिन बज़ाहिर गवाहियाँ यही हैं कि लगता है कि यह सही नहीं है।

(उल-फ़ारूक़ उमर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल भाग 1 पृष्ठ 53-54 बाब सोहबत अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रकाशन दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2007 ई.)

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि सबसे पहले मुहाजिरीन में से जो हमारे पास आए वह हज़रत मुसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो बनू अब्दुल दार में से थे। फिर हज़रत इब्ने उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु आए जो अंधे थे और बनू फ़हर में से थे। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बीस लोगों के साथ सवार हो कर आए। हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे पीछे ही हैं अर्थात कुछ अरसा बाद आ जाऐंगे। फिर कुछ समय बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे।

(उसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़ातिल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 145 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

यदि यह रिवायत सही है तो फिर ज़्यादा मज़बूत सम्भावना यही है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसी वक़्त मज्लिस में हिज्रत का वर्णन कर दिया हो और जोश में कह दिया हो कि मुझे रोक कर दिखाना लेकिन हिज्रत ख़ामोशी से ही की है क्योंकि यह रिवायत भी आती है कि बीस लोग आपके साथ थे। बहरहाल अल्लाह अधिक जानता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना पहुंच कर क़ुआ में रिफ़ाआ बिन अब्दिल मुन्ज़र के मेहमान हुए।

(सैरुल सहाबा भाग 1 पृष्ठ 93 प्रकाशन दारुल इशात उर्दू बाज़ार कराची 2004 ई.)

क़ुबा जैसा कि हम जानते हैं मदीने से तीन मील की दूरी पर उस की ऊपरी आबादी है और यहां अंसार के कुछ ख़ानदान आबाद थे। इन सब में मुमताज़ अम्र बिन औफ़ का ख़ानदान था। इस ख़ानदान के सरदार कुलसूम बिन बिदम थे। क़ुबा पुहुँच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्ही के मकान पर क़ियाम फ़रमाया था । (फ़र्हिंग सीरत पृष्ठ 230)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई चारे के सम्बन्ध में मुख़्तलिफ़ रिवायात मिलती हैं। एक रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाई चारा क़ायम फ़रमाया लेकिन ये भाई चारा भी दो अवसरों पर हुआ था एक दफ़ा मक्का में और एक दफ़ा हिज्रत के बाद मदीना में। मक्का में जो भाई चारा क़ायम फ़रमाया था उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने साथ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रखा था और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ भाई चारा क़ायम फ़रमाया था। बहरहाल भाई चारा क़ायम होने के ये दोनों अलैहदा अलैहदा वाक़ियात हैं। मदीना

में मुहाजिर और अंसार के मध्य भाई चारा क़ायम फ़रमाया था और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिज्रत के बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उवैम बिन सायदा रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाई चारा क़ायम फ़रमाया था। एक दूसरी रिवायत के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई चारा हज़रत इत्बान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ क़ायम फ़रमाया था। एक और रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई चारा हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हु से क़ायम फ़रमाया था।

(भाग सबुलुल हुदा वर्रिशाद फी सीरत ख़ैरुल इबाद भाग 3 पृष्ठ 363 फी मवाख़ात बैयन असहैबेही रज़ी अल्लाह अन्हुम प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद भाग 3 पृष्ठ 206 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो यह लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई चारा हज़रत इत्बान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ था।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 277)

अज़ान की शुरुवात के बारे में एक रिवायत इस प्रकार मिलती है कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हम सुबह के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ाब सुनाई। यह हज़रत अब्दुल्लाह के ज़िमन में भी वर्णन हो चुका है तो यहां भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क्योंकि वर्णन है इसलिए कुछ थोड़ा सा हिस्सा वर्णन कर देता हूँ या दूसरी रिवायात में देख के कर देता हूँ। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यक़ीनन यह स्वप्न सच्चा है जो स्वप्न वर्णन किया है। तुम बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जाओ क्योंकि वह तुम्हारी निसबत ज़्यादा बुलंद आवाज़ वाले और मुनादी करने वाले हैं। उनको बताते जाओ जो तुम्हें बताया गया है । अत: वह इस की मुनादी करे। वह अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ के लिए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ सुनी तो हज़रत उमर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास अपनी चादर घसीटते हुए आए और वह यह कह रहे थे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! उस की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा है यक़ीनन मैं ने भी वही देखा है जैसा कि उसने अज़ान में कहा है। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अत: समस्त हमद अल्लाह ही के लिए है। यह बात ज़्यादा पुख़्ता है।

(सुंन अलतरमज़ी किताब अस्सलात बाब ما جاء فی بدء الاذان हदीस 189)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उस को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी थे। अल्लाह तआला ने उन को स्वप्न के द्वारा से अज़ान सिखाई और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्ही के स्वप्न पर विश्वास करते हुए मुस्लमानों में अज़ान का रिवाज डाला। बाद में क़ुरआन की वह्यी ने भी इस की तसदीक़ कर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे भी ख़ुदा तआला ने यही अज़ान सिखाई थी परन्तु बीस दिन तक मैं ख़ामोश रहा। इस ख़्याल से कि एक और व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह बात वर्णन कर चुका है। "क्योंकि यह पहले वर्णन हो चुकी थी इसलिए मैं ख़ामोश रहा कि वर्णन की ज़रूरत नहीं।" इसी की तरफ़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह हदीस भी इशारा करती है कि اَلْمُؤْمِنُ یَرٰی اَوْ یُرٰی لَہٗ अर्थात मोमिन को कभी तो सीधे बिना किसी माध्यम के ख़बर दी जाती है कभी दूसरों के माध्यम उसे ख़बर पहुंचाई जाती है।" (तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 624-625)

बाक़ी इंशा-ए-अल्लाह भविष्य में वर्णन करूँगा।

इस वक़्त मुख़्तसिरन में इस तरफ़ भी तवज्जा दिलानी चाहता हूँ कि आज रमज़ान का आख़िरी जुमा है। इस को केवल रमज़ान के आख़िरी जुमा के तौर पर न लें बल्कि यह जुमा हमारे लिए भविष्य के के लिए नई राहें मुतय्यन करने वाला होना चाहिए। रमज़ान में जिन बातों की तरफ़ तवज्जा हुई है और जो नेकियां करने की तौफ़ीक़ मिली है उन्हें रमज़ान के बाद भी हमें जारी रखने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि इस में तरक़्क़ी करनी चाहिए अन्यथा रमज़ान में से गुज़रना हमारे लिए लाभदायक नहीं है यदि हम इन नेकियों और पाकीज़ा तबदीलियों को क़ायम नहीं रखते और इस में तरक़्क़ी नहीं करते। पिछले जुमा को मैं ने दुरूद और अस्तग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा दिलाई थी वे केवल् रमज़ान तक ही महिदूद न रहे कि रमज़ान गुज़रा और हम दुनियावी कामों में इस तरह व्यस्त हो जाएं कि दुआओं और अस्तग़फ़ार को भूल ही जाएं। इस तरफ़ भी मैं ने विशेषत: कहा था कि हमें हमेशा याद रखना चाहिए। इस ज़माने में जब दज्जाली चालें नए-नए हरबे इस्तिमाल कर रही हैं। दुनिया की चकाचौंद ने अक्सरीयत को अपनी लपेट में लिया हुआ है। हमारे नौजवान और बच्चे भी बाज़-औक़ात उसके ज़ेर-ए-असर आ जाते हैं। ऐसे में हमें अपने लिए भी बहुत दुआओं की ज़रूरत है कि अल्लाह तआला हमें इन शैतानी हमलों से दज्जाली हमलों से बचा के रखे।

और अपने बच्चों को अपने साथ चिमटा कर अपने साथ लगा कर एक उनका ख़ास सम्बन्ध अपने साथ पैदा कर के उन्हें ख़ुदा तआला की हस्ती और इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम के बारे में भी बताने की ज़रूरत है और फिर मुकम्मल यक़ीन करवा कर, बच्चों के दिलों में मुकम्मल यक़ीन पैदा करवा कर फिर उन्हें ख़ुदा तआला के साथ ऐसा चिमटाएं कि उनका कोई फ़ेअल, कोई कार्य, कोई काम, उनकी कोई सोच ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के ख़िलाफ़ न हो, उस की तालीम के ख़िलाफ़ न हो। हर दुनियावी सोच और फ़ित्ना का उनके पास उत्तर हो, यह नहीं कि कुछ चीज़ों के उत्तर नहीं आते और दूसरों से वे प्रभावित हो जाएं, और इस उत्तर की वजह से वे अपने आपको उन फ़ित्नों से महफ़ूज़ रखने वाले बन सकें। और यही हमारी नसलों की ज़िंदगियों को संवारने और उनकी जीवनी की ज़मानत है और हर किस्म के फ़ित्नों से अपनी नसल को बचाने का यही सही तरीक़ है लेकिन यह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक हम स्वयं भी ईमान और यक़ीन में अपने आला मयार हासिल नहीं करते, उस मयार तक नहीं पहुंचते जो एक मोमिन का ख़ास्सा होना चाहिए। यह उस वक़्त संभव होगा जब हमारा सम्बन्ध ख़ुदा तआला से मज़बूत होगा। हमारी नमाज़ें, हमारी इबादतें मयारी होंगी। हम अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझने वाले होंगे कि हमने क्यों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है। यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है जो हम पर डाली गई है कि अपने ईमानों को मज़बूत करते हुए, अपने आमाल पर मुस्तक़िल नज़र रखते हुए अपनी नसलों को बचाने का माध्यम बनें। बेशर्मी और बेहूदा बातों की इंतिहा जितनी आजकल है शायद ही पहले कभी हो। हर घर में टीवी के द्वारा से इंटरनैट के द्वारा से ये चीज़ पहुंची हुई है। पहले तो बाहर जा के ख़तरा होता था अब तो घरों के अंदर ख़तरा है। छुप के बच्चे बैठ के देख रहे हैं। पता ही नहीं लगता क्या कुछ देख रहे हैं। अत: बहुत ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है।

जो बुज़ुर्गों की या आरंभिक अहमदियों की या उन अहमदियों की औलादें हैं जिन्हों ने स्वयं बैअत कर के सिलसिला में शमूलीयत इख़्तियार की है, ज़माना के इमाम को माना है और अपने ईमानों को बचाने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहे और करते रहे। क़ुर्बानी दी। उन्हें हमेशा याद रखना चाहिए कि हम भी दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखते हुए अपनी हालतों की तरफ़ नज़र रखेंगे तभी हम अपने आपको भी बचा सकते हैं और अपनी नसलों को भी बचा सकते हैं। कोई ख़ानदान चाहे वह बुज़ुर्गों का ख़ानदान हो या किसी बुज़ुर्ग की जो औलाद है उसे उसका ख़ानदान और बुज़ुर्गी ये ज़मानत नहीं दे सकते कि ज़रूर अल्लाह तआला उन्हें नवाज़ता रहेगा या उनसे प्रसन्न रहेगा। हर व्यक्ति का कर्म बहरहाल अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए ज़रूरी है। अपने कर्म ही हैं जो हमें बचाएँगे। किसी की रिश्तेदारी, किसी का ख़ानदान किसी को नहीं बचा सकता। इसलिए इस के लिए हमेशा बहुत दुआ भी करनी चाहिए। अपनी दीनी कमज़ोरियों पर नज़र भी रखनी चाहिए। अपने बच्चों और नसलों की दुनिया से ज़्यादा दीन में तरक़्क़ी के लिए दुआ करनी चाहिए। दुनियावी तरक़्क़ी के लिए हम बहुत दुआएं करते हैं दीन की

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तरक़्क़ी के लिए इस से ज़्यादा दुआ करनी चाहिए।

इसी तरह जो स्वयं अहमदी हुए हैं उन्हें भी अपनी सोचों को, अपने कार्य को इस प्रकार पर चलाना होगा तभी हमारी भी अस्तित्व है और हमारी नसलों की भी अस्तित्व है। अत: रमज़ान के इन बचे दिनों में इस के लिए भी बहुत दुआएं करें कि अल्लाह तआला हमारे और हमारी नसलों के दीन को सलामत रखे और हमारी रुहानी तरक़्क़ी हो। रमज़ान के बाद भी हमारी इबादतों के मयार ऊंचे से ऊंचे होते रहें। हमारा ख़ुदा तआला से पक्का सम्बन्ध क़ायम हो। हम दज्जाल की चालों में आने से महफ़ूज़ रहें। केवल दुनियावी लोभ हमारा उद्देश्य न हों बल्कि अल्लाह तआला हमें उन दीनी और दुनियावी नेमतों से नवाज़े जो हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बनाते हुए हमेशा उस के आगे झुकने वाला बनाए रखें हमेशा उस का कामिल आबिद बनाए रखें।

इसी तरह इस बात की तरफ़ भी तवज्जा दिलाना चाहता हूँ कि आजकल जो कोरोना की बीमारी फैली हुई है जिसने समस्त दुनिया को अपनी लपेट में लिया हुआ है इस से बचने के लिए और अल्लाह तआला का रहम हासिल करने के लिए भी विशेषत: बहुत दुआएं करें। इसी तरह विशेषत: जिन देशों में अहमदियत की मुख़ालिफ़त ज़ोरों पर है और ज़िंदगियां उन के लिए कठिन की हुई हैं उन के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उन के लिए आसानियां पैदा फ़रमाए। पाकिस्तान के अहमदी जो हैं उनको तो विशेषत: सदक़ा और ख़ैरात और दुआओं पर, इन दिनों में भी और बाद में भी, हमेशा बहुत ज़्यादा तवज्जा देनी चाहिए। इंशा-ए-अल्लाह तआला ये दुआएं और अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने की यह जो कोशिशें हैं दुश्मन के हर छल और प्रयास को नाकाम-ओ-ना-मुराद कर देंगी। رَبِّ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ كُلِّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ. और दुआएं जो हैं ये बहुत पढ़ें लेकिन यह भी याद रखें कि केवल ज़बानी दुआएं काम नहीं आतीं, लोग ख़तों में पूछ लेते हैं कि मैं कौन सी दुआ करूँ? जब तक हम अपनी नमाज़ों को सँवार के नहीं पढ़ेंगे, जब तक उनके हक़ नहीं अदा करेंगे मुँह से केवल सारी दुआएं करना काम नहीं आता। नमाज़ों का जिस तरह एहतिमाम रमज़ान में है यह बाद में भी जारी रहना चाहिए तभी अल्लाह तआला के रहम और नुसरत को हम हक़ीक़ी रंग में खीचने वाले बन सकते हैं।

इसी तरह हर किस्म के फ़ित्ने से बचने के लिए भी बहुत दुआएं करें। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इस रमज़ान में जो बाकी चार पाँच दिन रह गए हैं उनमें कामयाबी से गुज़रने वाले हों और फिर रमज़ान के बाद इन नेकियों को जारी रखने वाले हों। यह भी याद रखें कि हम अपनी दुआओं के दायरे को जितना बड़ा करेंगे उतने ही अल्लाह तआला के फ़ज़ल हम पर होंगे। इसलिए विशेषत: हर अहमदी को हर अहमदी की हर किस्म की मुश्किलात दूर होने के लिए भी दुआएं करते रहना चाहिए इस से ग़ैर महसूस तौर पर आपस की मुहब्बत और भाई चारे और सम्बन्ध की फ़िज़ा भी पैदा होगी। अल्लाह तआला के फ़ज़लों से हिस्सा तो मिलेगा ही लेकिन एक अमली फ़ायदा भी होगा कि ज़्यादा प्यार-ओ-मुहब्बत पैदा होगा।

उमूमी तौर पर मुस्लिम उम्मा के लिए भी दुआ करें। जिस तरफ़ ये चल पड़े है और जो ज़माने के इमाम का इंकार कर के अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत ख़राब कर रहे है इस से अल्लाह तआला उनको महफ़ूज़ रखे। इन्सानियत के लिए मजमूई तौर पर दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें भी सही रास्ते पर चलाए और अल्लाह तआला की नाराज़गी से बचने की तौफ़ीक़ दे। बहरहाल हमारा काम है दुआएं करना और दुआएं करना और दुआएं करते चले जाना। रमज़ान में भी और रमज़ान के बाद भी। सबको अल्लाह तआला इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 1 का शेष

मौऊद हैं जिसका वर्णन हदीसों और क़ुरआन शरीफ़ में है? मैंने शाम की नमाज़ के बाद दवात क़लम और काग़ज़ हज़रत के आगे रख दिया और निवेदन किया कि एक व्यक्ति ऐसा लिखता है। हज़रत ने शीघ्र काग़ज़ हाथ में लिया और ये कुछ पंक्तियां लिख दें

"मैंने पहले भी इस नीचे लिखी बात को विस्तार से अपनी किताबों में क़सम के साथ लोगों पर प्रकट किया है और अब भी इस पर्चा में इस ख़ुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूँ,जिसके सामर्थ्य में मेरी जान है कि मैं वही मसीह मौऊद हूँ,जिसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सहीह हदीसों में दी है जो सही बुख़ारी और सही मुस्लिम और दूसरी सहीह किताबों में वर्णित हैं। व कफ़ा बिलल्लाहे शहीदा।" (और अल्लाह इस बात पर गवाह है।)

लिखने वाला मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद 17 अगस्त 1899 ई

इस ज़िक्र से मेरे दो उद्देश्य हैं। एक यह कि अपनी जमाअत का ईमान बढ़े और उन्हें वही आन्नद और मज़ा प्राप्त हो जो यहां के ख़ुश-क़िस्मत हाज़िरीन को उस क्षण प्राप्त हुआ और उन्होंने सच्चे दिल से स्वीकार किया कि उनको नया ईमान मिला है और दूसरे यह कि इन्कार करने वाले और कुधारणा करने वाले इस क़सम में ठंडे दिल से ग़ौर करें और सोचें कि बनावटी कज़्ज़ाब और झूठ बोलने वाले के मुंह की यह शान और उसे यह साहस हो सकता है कि प्रताप वाले ख़ुदा की ऐसी और इस तरह और ऐसे भीड़ मैं कसम खाए। अल्लाहु-अकबर !अल्लाहु-अकबर!! अल्लाहु-अकबर

21 अक्तूबर 1899 ई

मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के प्रादुर्भव का उद्देश्य। ज़िन्दा ख़ुदा पर ज़िन्दा ईमान पैदा करना।

लाला केशवदास साहिब तहसीलदार बटाला संयोग से कादियान में पधारे और हज़रत अक़दस की मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ लाए और निवेदन किया कि मुझे फ़कीरों से मिलने का बहुत शौक़ है और इसी शौक़ के कारण से आप की सेवा में हाज़िर हुआ।

हज़रत अक़दस ने फ़रमाया "बे-शक यदि आपके दिल में नेक लोगों के साथ मुहब्बत न होती तो आप हमारे पास क्यों आते और एक दुनिया वालों को क्या ज़रूरत पड़ी है कि वह एक दुनिया से अलग एकन्तवासी के पास जाए। समानता एक ज़रूरी बात है और असल तो यह है कि जब कि इन्सान एक नष्ट होने वाली हस्ती है और मृत्यु का कुछ भी पता नहीं कि कब आ जाए और उम्र एक अस्थायी वस्तु है फिर कितना आवश्यक है कि अपने सुधार और मुक्ति की चिन्ता में लग जाए, परन्तु मैं देखता हूँ कि दुनिया अपनी धुन में ऐसी लगी है कि इस को आख़िरत की कुछ चिन्ता और ध्यान ही नहीं। ख़ुदा तआला से ऐसे लापरवाह हो रहे हैं मानो वह कोई हस्ती ही नहीं ऐसी हालत में जबकि दुनिया की ईमान की हालत इस सीमा तक कमज़ोर हो चुकी है अल्लाह तआला ने मुझे मामूर करके भेजा है ताकि मैं ज़िन्दा ईमान ज़िन्दा ख़ुदा पर पैदा करने के मार्ग बतलाऊं। जैसा कि ख़दा तआला का आम क़ानून है। बहुत लोगों ने जो नेकी और भलाई से हिस्सा न रखते थे। ख़ुदा के भय और इन्साफ़ से अज्ञान थे। मुझे झूटा और मुफ़्तरी कहा और हर पहलू से मुझे दुख देने और कष्ट पहुंचाने की कोशिश की। कुफ़्र के फ़तवे देकर मुसलमानों को बदज़न करना चाहा और घटना के विरुद्ध बातों को गर्वनमेंट के सामने पेश करके उस को भड़काने की कोशिश की। झूटे मुक़द्दमे बनाए। गालियां दीं। क़तल करने के षडयन्त्र किए। अत: कौन सी बात थी जो उन्होंने नहीं किया, परन्तु मेरा ख़ुदा हर समय मेरे साथ है। उस ने मुझे उन की हर शरारत से पहले उन के फ़ित्ना और उसके अंजाम की ख़बर दी और आख़िर वही हुआ जो उस ने एक अरसा पहले मुझे बतलाया था और कुछ वे लोग भी हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने सौभाग्य,ख़ुदा तआला के भय और ईमान के नूर से हिस्सा दिया है। जिन्होंने मुझे पहचाना और इस नूर के लेने के लिए मेरे गिर्द जमा हो गए जो मुझे ख़ुदा तआला ने अपनी बसीरत और मार्फ़त प्रदान की है। उन लोगों में बड़े बड़े आलिम हैं। ग्रैजूएट हैं, वकील और डाक्टर हैं,गर्वनमेंट के सम्मान्नीय काम करने वाले हैं। व्यापारी और ज़मींदार हैं और साधारण लोग हैं।

खेद तो यह है कि अयोग्य विरोधी इतना भी तो नहीं करते कि एक हक़ बात जो हम प्रस्तुत करते हैं। इस को आराम से सुन ही लें। उन में ऐसे उच्च आचरण कहां कहाँ? वर्ना सच्ची बात की मांग तो यह है कि

मर्द बायद कि गैर्द अंदर गोश
गर नविश्त सत पंद बर दीवार

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

ख़ुत्बः जुमअः

ए दिल तो नीज़ ख़ातिर-ए-ईनां निगाहदार का आखिर कुनंद दवाए हुब्ब-ए-पयम्बर स.अ.व.

लोग तो शायद कम जानकारी के कारण यह समझते हैं कि वास्तव में अहमदी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अपमान के अपराधी हो रहे हैं हमने हमेशा देखा है कि इन्ही में से क़तरात मुहब्बत टपकते रहे हैं और भविष्य में भी इन शा अल्लाह टपकेंगे

ये लोग विरोध इसी लिए करते हैं कि वे समझते हैं कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विरुद्ध हैं। यह विरोध कुछ ग़लत-फ़हमियों के नतीजा में है तुम सारी दुनिया को कुछ दिनों के लिए धोखा दे सकते हो या तुम कुछ लोगों को हमेशा के लिए धोखा दे सकते हो। लेकिन तुम सारी दुनिया को हमेशा के लिए धोखा नहीं दे सकते। सच्चाई आहिस्ता-आहिस्ता खुल कर सामने आ जाती है

अतः हमारा काम दुआ करना है और सब्र करना है और यही बेहतरीन माध्यम है जो इन शा अल्लाह तआला हमें सफ़लता भी अता फ़रमाएगा हमारा काम यही है कि एक मुस्लमान के लिए अपने ख़्यालात और अपने एहसासात को साफ़ रखें। उनके लिए दुआएं करते रहें कि अल्लाह तआला जल्द इनकी आँखें खोले और ये ज़माने के इमाम को मानने और पहचानने वाले बन जाएं

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 मई2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

पिछले दिनों एक मौलवी-साहब सोशल मीडीया पर फ़र्मा रहे थे कि दुनिया में कहीं भी उपद्रव और लड़ाई हो रही है इस की वजह क़ादियानी हैं बल्कि फ़लस्तीन के उपद्रव की भी वे ज़िम्मेदारी क़ादियानियों पर, अहमदियों पर डाल रहे थे। और फिर आगे जिस तरह उन लोगों का तरीका-ए-कार है, जिस तरह आम तौर पर कहा करते हैं कि इसलिए अहमदियों के साथ यह व्यवहार करो, वह व्यवहार करो और उनको क़तल करना, उनको मारना हर चीज़ वैध है। बहरहाल यह उनका तरीक़ा है ये उनकी बातें हैं और जब से अहमदियत का आरंभ हुआ है यही बातें ये लोग करते रहे हैं जो आयमतुल कुफ्फ्र कहलाते हैं। लेकिन ख़ुदा का लाख लाख शुक्र है कि हम उस मसीह-ओ-महदी के मानने वाले हैं जिसने हमें यह शिक्षा दी है कि उनकी ये बेहूदा और व्यर्थ की बातें सुनकर, दिलदुखाने वाली बातें सुनकर और न केवल ये बातें बल्कि उनके कर्म भी देख कर, उनका भी सामना कर के सब्र और दुआ से तुमने काम लेना है। ये आयमतुल कुफ्फ्र हैं जिन्हों ने मासूम मुस्लमानों को जमाअत अहमदिया के बारे में ग़लत बातें फैला कर भड़काया हुआ है। लोग तो शायद कम जानकारी के कारण या समझते हैं कि वास्तव में अहमदी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अपमान के अपराधी हो रहे हैं इसलिए उनके साथ ये व्यवहार ज़रूर होना चाहिए, जो मौलवी कहता है वह सच्च कहता है । ये तो लोगों की, आम मुसलमानों की हालत है लेकिन जो ज्ञान रखने वाले मौलवी हैं और हक़ीक़त में ज्ञान रखते हैं कि जो कुछ वे कह रहे हैं उस की कोई ठोस बुनियाद नहीं है और केवल ये लोग उपद्रव पैदा करने की कोशिश करते हैं ताकि उनके मंच सलामत रहें और उनको कोई उनकी जगह से न हिलाए। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि अल्लाह तआला ने उन लोगों के साथ क्या व्यवहार करना है। हमारा काम तो जैसा कि मैंने कहा दुआ करना है और जैसा कि मैंने ईद के ख़ुतबा में भी कहा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि दुश्मन के लिए भी दुआ करो। (उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 96)

हम तो दुआ करने वाले हैं और दुआ करते हैं और करते रहेंगे। यह विरोध कोई नई चीज़ नहीं है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने से शुरू है। आप पर भी हमले किए जाते थे। आप की बातें सुनने के लिए आने वालों पर भी हमले किए जाते थे। कुछ लोग जो वैसे ही जलसों में आ जाते हैं कि देखें कहते क्या हैं। ज़रूरी नहीं होता कि वे मान भी लेंगे लेकिन इन मौलवियों को ख़तरा होता था कि यदि उन्होंने हज़रत मिर्ज़ा साहब की, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें सुन लीं तो ये लोग उनकी बैअत कर लेंगे। उनको पता था कि सच्चाई उनके साथ है इसलिए रोकते थे, न केवल रोकते थे बल्कि हमले भी करते थे लेकिन इस के बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन लोगों के लिए दुआ ही की जो रोकने वाले थे और इस तरह सख़्तियां करने वाले थे। ये दुआओं ही का परिणाम है कि उनमें से कुछ ऐसे हैं जो बावजूद विरोध के जमाअत में शामिल हुए और अब तक हो रहे हैं। अतः हम तो मौलवी के इस वर्णन के बावजूद भी कोई व्यर्थ की बात करने या उनकी भाषा को इस्तिमाल करने वाले नहीं हैं। हम तो इस के बावजूद दुआ ही करते रहेंगे और जैसा कि हमने हमेशा देखा है कि इन्ही में से क़तरात मुहब्बत टपकते रहे हैं और भविष्य के भी इन शा अल्लाह टपकेंगे। लोग के लिए, आम मुसलमानों के लिए हम उन लोगों की सख़्त बातें सुनने के बाद भी दुआ करते हैं। उनके कष्टों पर हमें कष्ट होता है और इस की वजह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा ही है। और आप को अल्लाह तआला का इरशाद भी यही था कि उनके ये अत्याचार भी ग़लतफ़हमी के कारण हैं और रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के कारण हैं जिसका ये दावा करते हैं। कर्म करें या न करें लेकिन दावा ज़रूर है इसलिए उनके लिए बद्दुआ नहीं करनी ।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक वाक़िया वर्णन करते हैं। कहते हैं मैं अभी बी बच्चा था। लाहौर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक दावत से वापिस तशरीफ़ ला रहे थे। आप जब बाज़ार से गुज़र रहे थे तो लोग छतों पर खड़े हो कर आपको ग़ालियां देते थे और कहते थे कि मिर्ज़ा दौड़ गया। मिर्ज़ा दौड़ गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मुझे समझ नहीं आ रहा था। शायद किसी जलसा में तक़रीर में उपद्रव हुआ था तो वहां से वापिस आ रहे थे। बहरहाल कहते हैं उसी अस्ना में मैं ने एक बुड्ढे को देखा जिसका एक हाथ कटा हुआ था और ताज़ा-ताज़ा हल्दी लगी हुई थी। लगता था कि हाथ को कटे भी अभी कुछ थोड़ा अरसा ही हुआ है। मैंने देखा कि वह बूढ्ढा भी अपना सही हाथ कटे हुए हाथ पर मारता जाता था और पंजाबी में कह रहा था कि मिर्ज़ा नठ गया। मिर्ज़ा नठ गया। कहते हैं मैं उस वक़्त अपनी आयु के लिहाज़ से हैरान होता था कि आख़िर यह क्यों कहता है कि मिर्ज़ा नठ गया। ऐसा क्या वाक़िया हो गया है? मुझे तो कोई ऐसी बात समझ नहीं आई। फिर केवल इसलिए कि विरोध था और मौलवियों ने लोगों को भड़काया हुआ था और जो उनके दिल में आता था वे कहते रहते थे चाहे बात का पता हो या न पता हो। बस बात करनी थी कर दी।

इसी तरह एक और वाक़िया वर्णन करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक दफ़ा लाहौर शहर में जा रहे थे तो पीछे से किसी ने हमला किया और आप गिर गए। कुछ रिवायात में आता है कि ठोकर लगी लेकिन गिरे नहीं थे। (सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु से, पृष्ठ 442) इसी तरह लोगों को पत्थर मारते भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हमने देखा। पत्थर भी मारते थे।

उद्देश्य उन दिनों में विरोध बड़े ज़ोरों पर था और क़ुदरती तौर पर जमाअत के कुछ दोस्तों को भी ग़ुस्सा आ जाता था कि आख़िर ये लोग बिला-वजह ऐसा क्यों करते हैं। उस वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ जबकि अभी तक की मालूमात के मुताबिक़ यह इल्हाम और किसी रिवायत में तो नहीं मिला लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यही फ़रमाया है कि यह इल्हाम था। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कविता तो है कि

ए दिल तो नीज़ ख़ातिर-ए-ईनां निगाहदार
का आखिर कुनंद दवाए हुब्ब-ए-पयम्बर स.अ.व.
(इज़ाला औहाम हिस्सा प्रथम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 182)

अर्थात हे हमारे मामूर ये मुस्लमान जो तुम्हें ग़ालियां देते हैं, यदि यह इल्हामन है तो अल्लाह तआला फ़र्मा रहा है कि फिर भी तू उनका लिहाज़ कर। आख़िर ये तुम्हें क्यों ग़ालियां देते हैं, तुम्हें मारने क्यों दौड़ते हैं और तुम पर हमला क्यों करते हैं? ये लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कारण ही तुम्हें मारते हैं और ग़ालियां देते हैं। इसलिए उनका लिहाज़ रखना बड़ा ज़रूरी है। जिस इशक़ के कारण

ये मार रहे हैं, वे जिस वजह से मार रहे हैं, वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत है जो अल्लाह तआला को बहुत प्यारी हैं इसलिए इस ग़लतफ़हमी के कारण हो या जो भी वजह है तुम उनका लिहाज़ करो। बद्दुआ न करो।

उद्देश्य हमारा जो विरोधी होता है तो तुम्हें यह देखना चाहिए कि इस के पीछे क्या बात है। क्या ये लोग जो हमें ग़ालियां देते हैं और कहते हैं कि हमारी चाय जो है वह शराब से भी बुरी है और शराब पीना जायज़ हो सकता है लेकिन अहमदियों की चाय पीनी वैध नहीं हो सकती। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह वर्णन करके फ़रमाते हैं कि यदि उन्हें पता लग जाए कि मेरे अंदर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का जो शोला जल रहा है वह उनके लाखों लाख के अंदर भी नहीं जल रहा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वे तुरंत तुम्हारे, अहमदियों के क़दमों में गिर जाऐंगे। ये लोग विरोध इसी लिए करते हैं कि वे समझते हैं कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विरुद्ध हैं। यह विरोध कुछ ग़लत-फ़हमियों के नतीजा में है।

फिर अपना विस्तार से वर्णन करने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी वर्णन फ़रमाया कि यदि लोग विरोध करते हैं और मुझे या सिल्सिला के संस्थापक को अहमदिया को या तुम्हें बुरा-भला कहते हैं तो जमाअत को याद रखना चाहिए कि ये तुम्हारे भाई हैं और किसी ग़लतफ़हमी में ग्रस्त हैं। अत: तुम बजाय नाराज़ होने के दुआएं करो और उन विरोध करने वालों को असल हक़ीक़त से अवगत करो। जब तुम उन्हें असल हक़ीक़त से अवगत कर दोगे तो उन्हें पता लग जाएगा कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दुश्मन नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे आशिक़ हैं और वही लोग जो हमें मारने पर तैयार हैं हमारी ख़ातिर मरने के लिए तैयार हो जाऐंगे।

(उद्धरित भेरा की सरज़मीन में एक निहायत ईमान अफ़रोज़ तक़रीर, अनवारुल उलूम भाग 22 पृष्ठ 84 से 86)

बहरहाल हमें अपने विरोधियों के लिए दुआ करनी चाहिए जैसा कि पहले भी मैंने कहा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही हमें सिखाया है कि दुआएं करो। इन्ही में से क़तरात-ए-मुहब्बत टपकते हैं, उन्ही में से लोग ईमान लाएँगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िया वर्णन करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मैं चौबारे में रहता था अर्थात ऊपर की मंज़िल में रहता था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मकान के निचले हिस्सा में रहते थे कि एक रात निचले हिस्सा से मुझे इस तरह रोने की आवाज़ आई जैसे कोई औरत प्रसवपीड़ा के कारण चिल्लाती है। मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने कान लगा कर आवाज़ को सुना तो मालूम हुआ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुआ कर रहे थे और आप कह रहे थे कि हे ख़ुदा ताऊन पड़ी हुई है और लोग इस के कारण मर रहे हैं। हे ख़ुदा यदि ये सब लोग मर गए तो तुझ पर ईमान कौन लाएगा। दूसरी जगह घटना तो यही है लेकिन हवाला यह है कि साथ की कोठड़ी में थे और दरवाज़े से आवाज़ आ रही थी। बहरहाल घटना यही वर्णन हुई है जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन कर रहे हैं। आप दुआ कर रहे थे कि यदि ये लोग मर गए तो तुझ पर ईमान कौन लाएगा? अब देखो ताऊन वह निशान था जिसकी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी। ताऊन के निशान का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों से भी पता लगता है लेकिन जब यह ताऊन आती है तो वही व्यक्ति जिसकी सच्चाई को ज़ाहिर करने के लिए आती है वह ख़ुदा तआला के सामने गिड़गिड़ाता है और कहता है कि हे अल्लाह यदि ये लोग मर गए तो तुझ पर ईमान कौन लाएगा? अत: मोमिन को आम लोगों के लिए बद्दुआ नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह उन्ही के बचाने के लिए खड़ा होता है। आम लोगों को बचाना ही एक मोमिन का काम है। यदि वह उनके लिए बद्दुआ करेगा तो बचाएगा किस को? फिर तो मर गए सारे यदि दुआ स्वीकार होती है।

अहमदियत क़ायम ही इसलिए हुई है कि वह इस्लाम को बचाए। अहमदियत क़ायम ही इसलिए हुई है कि वह मुस्लमानों को बचाए। इन्सान का सम्मान उन्हें वापिस दिलाए। अत: जिन लोगों को उच्च स्थान पर पहुंचाने के लिए हमें खड़ा किया गया है उनके लिए हम बद्दुआ कैसे कर सकते हैं? हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आख़िर तुमसे ज़्यादा ख़ुदा तआला की ग़ैरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा ने अपने इल्हाम में वही फ़रमाया कि :

ए दिल तो नीज़ ख़ातिर-ए-ईनां निगाहदार
का आखिर कुनंद दवाए हुब्ब-ए-पयम्बर स.अ.व.

इस में ख़ुदा तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल को संबोधित करते हुए आप के मुँह से कहलाता है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेरा में शायद यह तक़रीर की थी इस में फ़रमाया था। इस पंक्ति को वर्णन करते हुए यह दुबारा एक और घटना है। पहले और घटना थी। लाहौर की थी, यह भेरा की है। फ़रमाया कि ख़ुदा तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के दिल को संबोधित करते हुए आप के मुँह से कहलाता है कि हे मेरे दिल तू उन लोगों के ख़्यालात और जज़बात और एहसासात का ख़्याल रख कर ताकि उनके दिल मैले न हो। यह न हो कि तू तंग आकर बद्दुआ करने लग जाए। आख़िर उनको तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है और वे इसी मुहब्बत के कारण से जो उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से है। तुझे ग़ालियां देते हैं, ये जो ग़ालियां तुझे देते हैं वे इसी वजह से है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो उनको मुहब्बत है। यह उस की वजह है। यही असल चीज़ है। हम जानते हैं कि हमारे विरोधियों में से एक हिस्सा अनूचित विरोध कर रहे हैं लेकिन एक हिस्सा केवल उनके जाल में फंस गया है। इसलिए वे हमारा विरोध करते हैं। और पाकिस्तान में तो जो अक्सरीयत है या दुनिया के और मुल्कों में भी वे उनके जाल में फंसी हुई है। जबकि उनका विरोध हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के कारण है। जब उन पर यह बात खुल जाएगी कि हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करने वाले हैं तो वे कहेंगे कि ये लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त क़ायम करने वाले हैं। इनकी मदद करो। यह दिन ज़रूर आएगा। इन शा अल्लाह। आख़िर ग़लत-फ़हमियाँ कब तक जाएँगी!

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि एक अंग्रेज़ लेखक है उसने लिखा है कि तुम सारी दुनिया को तो केवल कुछ दिनों के लिए धोखा दे सकते हो, कुछ लोगों को हमेशा के लिए धोखा दे सकते हो। बिल्कुल ठीक है लेकिन तुम सारी दुनिया को हमेशा के लिए धोखा नहीं दे सकते। अर्थात यह संभव है कि सौ फ़ीसद लोग कुछ दिनों के लिए गुमराह हो जाएं या दस आदमी हमेशा के लिए गुमराह हो जाएं लेकिन यह नहीं हो सकता कि सारी दुनिया हमेशा के लिए गुमराह हो जाए। हक़ीक़त भी यही है। सच्चाई आहिस्ता-आहिस्ता खुल कर सामने आ जाती है और अब यही हम देखते हैं कि वही लोग जो लोगों के धोखे में आए, लोगों की बातें सुनीं आख़िर कार उन्ही में से अहमदी हो रहे हैं। जमाअत अहमदिया की संख्या जो बढ़ रही है वह कहाँ से बढ़ रही है? उन्ही लोगों में से बढ़ रही है जो पहले विरोधियों के साथ थे।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 33 पृष्ठ 221 से 223 ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 18 जुलाई 1952 ई.)

अत: यह विरोध इन शा अल्लाह एक दिन ख़त्म हो जाएगी और इन्ही में से लोग आकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल होंगे। कई लोग मुझे भी लिखते हैं। आजकल भी लिखते हैं कि विरोध के बाद जब हमें कहा गया कि दुआ करो या लिटरेचर पढ़ो। जब हमने दुआ की और लिटरेचर पढ़ा तो हक़ीक़त खुली और अब हम बैअत करना चाहते हैं। और वे बैअत करके जमाअत में शामिल हो गए हैं और यह हमेशा से चलता चला आ रहा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस बारे में लिखा हुआ है अन्य खलिफ़ाओं ने भी लिखा हुआ है कि बहुत सारे लोग इस तरह पत्रों में लिखते थे और आज भी यही कुछ हो रहा है।

अत: यदि ये मौलवी हमारे ख़िलाफ़ बयान देते हैं तो इस माध्यम से आज कल जितना अहमदियत का संदेश पहुंचा रहे हैं और विशेषत: उस वर्ग में जहां हमारी तरफ़ से पैग़ाम पहुंचना मुश्किल था तो ये हमारा काम कर रहे हैं और यह हमारे लाभ के लिए है। दुआ तो हम उनके लिए भी करते हैं कि अल्लाह तआला यदि उनमें कोई भी उपद्रव का कण है तो अल्लाह तआला उन्हें अक़्ल दे और उन्हें समझ आ जाए लेकिन लोगों के लिए, आम मुसलमानों के लिए, ज़्यादा दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला उनको उनके चंगुल से निजात दे।

बहरहाल यह हमारे फ़ायदे के लिए विरोध करते हैं ऐसी-ऐसी जगहों पर अहमदियत का पैग़ाम पहुंच रहा है जहां पहले नहीं पहुंचता था। या हमारे द्वारा नहीं पहुंच सकता था और फिर उनमें से कुछ लोग स्वयं सम्पर्क भी करते हैं। अत: हमारा काम दुआ करना है और सब्र करना है और यही बेहतरीन माध्यम है जो इन शा अल्लाह तआला हमें सफ़लता भी अता फ़रमाएगा। हमारा काम यही है कि एक मुस्लमान के लिए अपने ख़्यालात और अपने एहसासात को साफ़ रखें। उनके लिए दुआएं करते रहें कि अल्लाह तआला जल्द उनकी आँखें खोले और ये ज़माने के इमाम को मानने और पहचानने वाले बन जाएं।

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 17 June 2021 Issue No.24

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

(एडवांस कॉलेज ऐंटरैंस कवालीफ़ीकेशन, 97 प्रतिशत), बुशरा इक़बाल साहिबा (ओ लेवल 99 प्रतिशत), फ़ाखिरा शाहीन मुल्क साहिबा(ओ लेवल 97 प्रतिशत)

समारोह तक़सीम ऐवार्ड के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भाषण फ़रमाया

6 जून 2015 दिनांक शनिवार (बाक़ी रिपोर्ट)

औरतों के जलसा गाह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला का ख़िताब

तशह्हुद,ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

यहां जो शुरू में आयात तिलावत की गई हैं इस की पहली आयत ही हमें इस ओर ध्यान दिलाती है कि यदि तुम जो मोमिन कहलाते हो, जो मोमिन और मोमिना बनने का दावा करते हो अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ

(अल-अनफ़ाल 21) हे लोगो! जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करो और इस इताअत से उन आदेशों से मुँह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो। तुम तक ये आदेश पहुंचाए जा रहे हैं। अल्लाह तआला और उस के रसूल की बातें तुम तक पहुंचाई जा रही हैं। यह इताअत की शिक्षा और आदेश तुम्हें क्यों दिया जा रहा है? इस लिए ताकि तुम जहां उन हालतों को सुधारने वाले बन सको वहां उस के कारण से तुम में इकाई पैदा हो और व्यक्तिगत तौर पर भी और जमाअती तौर पर भी तुम्हें तरक्कियां और सफलताएं प्राप्त हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह हम पर अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने अपने आदेशों को क़ुरआन-ए-करीम में नाज़िल फ़रमाकर फिर आज तक उन्हें सुरक्षित भी रखा हुआ है। और यह भी फ़र्मा दिया कि प्रत्येक युग के लिए ये आदेश हैं। फिर इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेज कर उन आदेशों को खोल कर हमारे लिए प्रदान करने के सामान भी पैदा फ़र्मा दिए और फिर अहमदिया ख़िलाफ़त के साथ जोड़ करके हमें जहां अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों पर अनुकरण करने ,उस की इताअत करने की ओर ध्यान दिलाने के सामान पैदा किए वहां यह भी फ़र्मा दिया कि इस इताअत के कारण से तुम हमेशा ख़िलाफ़त के इनाम से भी फ़ैज़याब होते रहोगे। तुम्हारी इकाई और ताक़त भी क़ायम रहेगी और अल्लाह तआला के फ़ज़लों को प्राप्त करते चले जाने वाले होगे। अत: यदि किसी का यह दावा है कि मैं जमाअत का बैअत करने वाली हूं ,जमाअत अहमदिया में सम्मलित हूँ और ख़िलाफ़त अहमदिया को मानती हूँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और मह्दी माहूद समझती हूँ तो अल्लाह तआला और इस के रसूल के आदेशों का कामिल बोझ अपनी गर्दन पर डालना होगा। सम्पूर्ण इताअत के लिए अपने आपको प्रस्तुत करना होगा।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

गई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को मुतवज्जा करके फ़रमाया कि जैसे उस औरत को अपने बच्चे के मिल जाने से ख़ुशी हुई है इस से कई गुना ज़्यादा अल्लाह तआला को ख़ुशी होती है जब उस का गुनहगार बंदा उसकी तरफ़ मुतवज्जा होता है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस वाक़िया का एक दूसरा सबक़ आमोज़ पहलू बयान फ़रमाया है परन्तु मेरा उद्देश्य इस वाक़िया के बयान करने से यह है कि इस औरत को किस क़दर तड़प थी जब तक उस का असली उद्देश्य प्राप्त नहीं हुआ था परन्तु जब मक़सूद मिला तो उसे सकून हासिल हो गया। यही हाल हर इन्सान का है। असली मक़सद के मिलने के साथ ही तड़प दूर हो जाती है और सकून हासिल हो जाता है। अत: चूँकि असल मक़सद इन्सानी पैदाइश का ख़ुदा तआला की याद और उस का ज़िक्र ही है जब ख़ुदा मिल जाता है तो कोई जलन और तड़प नहीं रहती बल्कि सकून ही रहता है। जो लोग दुनिया की इच्छा में रहते हैं उनको जिस क़दर तरक़्क़ी मिलती है उन की जलन बढ़ती जाती है परन्तु जो ख़ुदा तआला की तरफ़ जाता है और जिस क़दर उस की तरफ़ मुतवज्जा होता है उतना ही उस के दिल का सकून बढ़ता जाता है। इस से साबित होता है कि उसने अपनी ज़ात की जिज्ञासा ही हमारी ज़िंदगी का असल मक़सद क़रार दिया है। अत: जब वह मक़सद पूरा हो जाता है इन्सान को सकून हासिल हो जाता है। हमारी रियास्तों को ही देखो अतरिक्त इसके कि उनकी हिफ़ाज़त गर्वनमैंट के द्वारा है परन्तु कुछ अमीरों सरदारों के डर का यह हाल है कि विदेश से बंद हो कर पानी आता है उनके सामने खोला जाता है फिर भी पहले दूसरों को पिलाया जाता है फिर राजा साहिब पीते हैं। इसी तरह उनका खाना है कि हज़ार इहितयातों में लगाया जाता है। फिर इस से पहले ख़ुद उसी को खिलाया जाता है जो पकाने वाला हो फिर उस को डाक्टर खाता है। फिर उनके सामने पेश होता है मानो कि हर-दम ख़तरा है और एहतियात होती रहती है। हर-दम बेचैनी रहती है। परन्तु हमारे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखो हर तरफ़ दुश्मन ही दुश्मन हैं परन्तु कोई ख़तरा नहीं। सकून और संतुष्टि है। दुश्मन भी अगर खाने की दावत देता है तो बेधड़क चले जाते हैं। एक दफ़ा एक यहूदन औरत ने ज़हर भी दे दिया परन्तु फिर भी अल्लाह तआला के इल्हाम से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह बात मालूम हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस से महफ़ूज़ रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस क़दर सकून क्यों था? इसी वजह से कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ऐसी हस्ती से सम्बन्ध क़ायम किया हुआ था जो ग़ैब को जानती है और इस से जब किसी का ताल्लुक़ हो जाता है तो वह अपने ग़ैब से बंदे को भी हस्ब-ए-ज़रूरत हिस्सा देता रहता है। अत: इस से ताल्लुक़ रखने वाला संतुष्ट रहता है। दीनी तरक़्क़ी में सकून की ज़्यादती और दुनयावी तरक़्क़ी में अदमें सकून की ज़्यादती की एक अध्यात्मिक वजह भी है और वह यह है कि दुनयवी तरक़्क़ी जिस क़दर इन्सान को हासिल होती है उसका माल ज़्यादा से ज़्यादा संदिग्ध होता जाता है और दूसरे लोगों का हिस्सा इस में ज़्यादा से ज़्यादा शरीक होता जाता है। लेकिन दीनी तरक़्क़ी की यह सूरत नहीं। दीनी तरक़्क़ी में इन्सान किस क़दर भी तरक़्क़ी करे वह अपना ही हिस्सा लेता है दूसरों का हिस्सा नहीं मारता। इसी की तरफ़ क़ुरआन-ए-करीम में दूसरी जगह इशारा है कि मोमिन को जन्नत मिलती है जिसकी कैफ़ीयत यह है कि عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (आले-इमरान रुकू : 14) अर्थात जन्नत की समस्त लंबाई चौड़ाई हर मोमिन को हासिल होगी। अंतर केवल यह होगा कि हर मोमिन अपनी ताकत और इच्छा के अनुसार इस से फ़ायदा हासिल कर रहा होगा। अत: अध्यात्मिक तरक़्क़ी में किसी का हक़ मारने का सवाल ही पैदा नहीं होता और चूँकि मोमिन किसी का हक़ नहीं मारता उसका दिल संतुष्ट होता है और उसकी रूह पर गुनाह और हक़तलफ़ी का बोझ नहीं होता।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 3 पृष्ठ 416 से 417 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad